Fortnightly per copy Rs. 4/- only

ओ३म्

3rd August 2020

आर्य जीवन

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month

प्रो. विट्ठल राव आर्य सर्व सम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाना के प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश -तेलंगाना, सुल्तान बाजार, हैदराबाद के चुनाव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी की अध्यक्षता में तथा चुनाव अधिकारी पं. धर्मपाल जी शास्त्री, श्री रामसिंह जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री सदाविजय आर्य जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री विरजानन्द जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा एवं ब्रह्मचारी दिक्षेन्द्र जी के देख-रेख में दि. २ अगस्त २०२०, रविवार के दिन पं. नरेन्द्र भवन में सम्पन्न हुए। इस चुनाव को सम्पन्न करने के लिए उ.प्र. मेरठ से पं. धर्मपाल जी शास्त्री, श्री रामसिंह जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा, श्री सदाविजय आर्य जी उपमंत्री

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाना के नवनिर्वाचित अधिकारीगण

स्वामी आर्यवेशजी बोलते हुए

नवनिर्वाचित पधाधिकारियों के साथ स्वामी आर्यवेश जी, पं. धर्मपाल शास्त्री जी, श्री सदाविजय जी आर्य, श्री रामसिंह जी, श्री विरजानन्द, श्री दीपक कुमार जी आदि

मंत्री वेंकटरघुरामुलु जी का सम्मान करते हुए स्वामी जी

प्रधान जी बोलते हुए

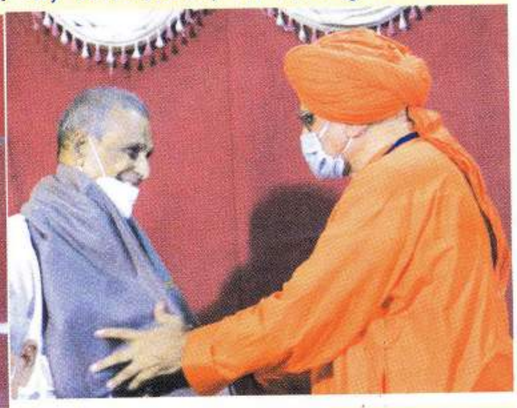

उपप्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी का सम्मान करते हुए स्वामी जी

उपप्रधान डॉ. वसुधा शास्त्री जी का सम्मान करते हुए

उपप्रधान श्री हरिकिशन वेदालंकार जी का सम्मान करते हुए

उपप्रधान डॉ. सी.ऐच. चन्द्रय्या जी का सम्मान करते हुए

उपप्रधान श्री बी. शिवकुमार जी का सम्मान करते हुए

उपमंत्री श्री रामचन्द्र कुमार जी का सम्मान करते हुए

उपमंत्री श्री पं.गणेश जी का सम्मान करते हुए

उपमंत्री श्री कृष्णभगवान जी का सम्मान करते हुए

प्रो. विट्ठल राव आर्य सर्व सम्मति से आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाना के प्रधान निर्वाचित

सार्वदेशिक सभा, श्री विरजानन्द जी उपमंत्री सार्वदेशिक सभा एवं ब्रह्मचारी दिक्षेन्द्र जी पधारे हुए थे। इनके मार्गदर्शन में सर्वसम्मति से प्रधान पद के लिए प्रो. विठ्ठल राव आर्य एवं मंत्री पद के लिए श्री वेंकटरघुरामुलु, एड्वोकेट निर्वाचित हुए। उपप्रधान पद पर सर्वश्री ठा. लक्ष्मण सिंह जी, श्री हरिशिन वेदालङ्कार जी, श्री बी. शिवकुमार जी, डॉ. चन्द्रय्या जी, डॉ. वसुधा शास्त्री जी निर्वाचित हुए तथा उपमंत्री पद पर सर्वश्री आर. रामचन्द्र कुमार जी, श्री कृष्णभगवान जी एवं श्री गोस्वामी गणेशपुरी जी निर्वाचित हुए। श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी कोषाध्यक्ष के लिए एवं पुस्ताध्यक्ष के लिए श्री जे. बसिरेड्डी जी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। इसी तरह श्री किशन गोपाल गिल्डा, श्री सी.एच. रविकिरण, श्री वेकंट रामिरेड्डी, श्री श्रद्धानन्द अंतरंग सदस्य निर्वाचित हुए एवं सार्वदेशि आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि के रूप में सर्वश्री विठ्ठल राव आर्य जी, श्री हरिकिशन वेदालङ्कार जी, श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी, श्री वेंकट रघुरामुलू जी, डॉ. सी.एम. चन्द्रय्या जी, श्री ए. रामचन्दर जी तथा श्री एम. जयव्रत जी, एम. कृष्णभगवान जी निर्वाचित हुए। चुनाव के उपरांत अधिकारिक तौर पर मुख्य चुनाव अधिकारी स्वामी आर्यवेश जी ने उपरोक्त निर्वाचित अधिकारियों के नामों की घोषणा की। उपस्थित सभी सदस्यों ने करतल ध्वनी से सभी का स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी ने उपरोक्त प्रतिनिधियों को तथा सभा में उपस्थित सभी सदस्यों से कहा कि निर्वाचित सभी अधिकारी एवं सदस्य आपस में किसी भी प्रकार का मनभेद न रखते हुए सहयोग तथा प्रेम से आगे ३ वर्षों तक के लिए एक जूट होकर आर्य समाज के कार्य को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लें और कर्मठता से कार्य करें।

ज्ञात हो कि आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना की चुनाव प्रक्रिया पिछले पूरे ६ माह से चल रही थी। सार्वदेशिक सभा के नियमानुसार तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना और आर्य समाज के लिए बने संविधान के अनुसार चुनाव प्रक्रिया को पूरी तरह प्रजातान्त्रिक तथा पारदर्शी तरीके से चलाया गया था। नियमों की पूरी प्रक्रिया को पूरा अवसर प्रदान करते हुए प्रतिनिधि सभा के चुनाव को सम्पन्न करवाया गया। आर्य जगत् को यह भी विदित करना हम अनिवार्य समझते है कि चुनाव के समय बाकायदा नामांकन दाखिल करने की प्रक्रिया को भी अपनाया गया। नामांकन पत्रों की जाँज के बाद तथा नामांकन पत्रों को वापस लेने के बाद जो भी उम्मीदवार रह गये थे वे सब पदों की बराबर की संख्या में होने से सभी को निर्विरोध व सर्व सम्मति से निर्वाचित घोषित किया गया। सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान व अन्य अधिकारी गण पूरी प्रक्रिया को नियमानुसार सम्पन्न कर आर्य जगत् में एक उदाहरण पेश किया है। सार्वदेशिक सभा के प्रधान ने अपील की कि आर्य जगत् में हर प्रान्त की प्रान्तीय सभाएं व आर्य समाजें संवैधानिक तथा नैतिक नियमों का पालन अपना दायित्व समझकर करें। आर्य समाज को प्रजातन्त्र का एक अनोखा उदाहरण पेश करने की उन्होंने अपील की।

श्रावणी उपाकर्म पर्व एवं आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस

दूसरे दिन सोमवार, ३ अगस्त २०२० के दिन प्रातः ९-०० बजे से २-०० बजे तक हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं श्रावणी उपाकर्म पर्व बड़े धूम-धाम से मनाया गया। प्रातः आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. -तेलंगाना के तत्ववावधान में राजमोहल्ली स्थित, पं. नरेन्द्र भवन में डॉ. वसुधा अरविन्द शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में यज्ञ सम्पन्न हुआ। इसमें सभी को नवीन उपवीत धारण कराया गया। तत् पश्चात् भवन के सभागार में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने की। इसमें मुख्य अतिथि के रूप में पं. धर्मपाल शास्त्री जी, श्री रामसिंह जी, भाई बन्सीलाल जी के सुपुत्र श्री सदाविजय जी आर्य एवं श्री विरजानन्द जी और ब्रह्मचारी दीक्षेनद्रजी, दीपक कुमार जी, विवेकानन्द शास्त्री जी तथा श्रीमती मधुश्री जी उपस्थित थे। इस अवसर पर आर्य सत्यग्रह बलिदान दिवस के उपलक्ष में उपरोक्त सभी विद्वानों ने आर्य समाज के द्वारा पिछले एक शतक से किए गए गौरवपूर्ण ऐतिहास का तथा घटनाक्रमों का वर्णन कर सभी को प्रेरित किया। पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी ने अपने अध्यक्षीय सम्भोधन में सन् १८५७ से अब तक आर्य समाज द्वारा चलाए गए बड़े-बड़े आन्दोलन एवं भारत के स्वतन्त्रता में किए गए कार्यों का वर्णन किया तथा समाज द्वारा चलाए गए सामाजिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी दी। जातिप्रथा, सतिप्रथा एवं भ्रूण हत्या के विरोध में आर्य समाज द्वारा चलाए गए पद यात्राओं के विषय में पूर्ण रूप से जानकारी देते हुए लग-भग एक घण्टे तक अपनी ओजस्वी वाणी से सभी को मंत्रमुक्ध किया। उसके पश्चात् सत्याग्रह में जिन वीरों ने अपने प्राण गवाएं उनको सामूहिक रूप से श्रद्धाजलि दी गई। इस पूरे कार्यक्रम में आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री विठ्ठल राव जी आर्य एवं मंत्री श्री वेंकट रघुरामुलू जी तथा अन्य सभी अधिकारी और गणमान्य व्यक्ति एवं सदस्य भारी संख्या में उपस्थित रहें। पश्चात् शान्ती पाठ से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

देश-विदेश के महापुरुषों द्वारा महर्षि दयानन्द सरस्वती के प्रति व्यक्त की गई श्रद्धांजलियां

-प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आधुनिक भारत के नेताओं द्वारा समर्पित श्रद्धासुमन-महत्वपूर्ण भूमिका

पिछले सौ वर्षों में राष्ट्र के पुनरुत्थान के लिए धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में आर्य समाज ने महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। अस्पृश्यता-निवारण, शिक्षा सुधार तथा नारी जागरण की दिशा में जो भी आन्दोलन चलाए गए आर्य समाज उन सब में आग्रगामी रहा। धार्मिक अन्ध-विश्वासों और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन के लिए अभी भी बहुत कुछ करना बाकी है। आर्य समाज जैसी संस्थाएँ ही ऐसे स्वयं सेवी युवक युवतियां तैयार कर सकती है जो इस कार्य में पूरे उत्साह और निष्ठा से जुट जाएँ। *-फकरुद्दीन अली अहमद (भूतपूर्व राष्ट्रपति)*

प्रशंसनीय योगदान

मूल वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा तथा हमारी जाति में समय के साथ-साथ प्रविष्ट तमाम कुरीतियों, अन्धविश्वासों एवं जड़ता को दूर करने में आर्य समाज ने प्रशंसनीय योगदान किया है, तथा आशा है कि वह इस मूल अक्षय कोष से राष्ट्र तथा जाति के जीवन को सिंचित करता रहेगा, जो कालान्तर में अनेक नामों और रूपों में अपने को प्रस्फुटित करता रहता है।

-एम. चेन्ना रेड्डी, (पूर्व राज्यपाल, उत्तर प्रदेश)

आर्य समाज ने अंधेरे में उजाला किया

हिन्दुस्तान में काला अंधेरा छाया हुआ था। इन्सान, का इन्सान को समझना मुश्किल था, आदमी-आदमी का दुश्मन बना था और अन्धविश्वास एवं बुराइयों से हमारा समाज घिरा हुआ था, ऐसी हालत में स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की और उसने आजादी के संघर्ष में बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया। *-शेख अब्दुल्ला (मुख्यमन्त्री, जम्मू कश्मीर)*

शक्ति-सुत

"मेरे निर्वल शब्द ऋषि की महत्ता का वर्णन करने में अशक्त है। ऋषि के अप्रतिम ब्रह्मचर्य, सत्य संग्राम और घोर तपश्चर्या के लिए अपने हृदय के पूज्य भावों से प्रेरित होकर मैं उनकी वन्दना करता हूँ। मैं ऋषि को शक्ति-सुत अर्थात् कर्मवीर योद्धा समझकर उनका आदर करता हूँ। उनका जीवन राष्ट्र निर्माण के लिए स्फूर्तिदायक, बलदायक और माननीय है।

दयानन्द उत्कट देशभक्त थे, अतः मैं राष्ट्रवीर समझकर उनकी वन्दना करता हूँ।" *-साधु टी.एल. वास्वानी*

विश्व के मित्र

"ऋषि दयानन्द विश्वमित्र अर्थात् विश्व के मित्र थे। उनका प्रेम सार्वभौम था, उनके हृदय में सबके लिए समान प्रेम था। ....ऋषि दयानन्द ने कब और कहां अन्य धर्मों पर घृणात्मक दृष्टि की है-मुझे तो इसका पता नहीं चलता। उन्होंने यह तो कही नहीं कहा कि अमुक धर्म बुरा और घृणा योग्य है, अतः उस धर्म के अनुयायी उसे मानना छोड़ दें। उन्होंने "सत्यार्थ प्रकाश" में अन्य धर्म-सम्बन्धी, जिन ग्रन्थों की आलोचना की है, वह उसके विचार स्वातन्त्र्य का सुन्दर उदाहरण है। विचार स्वातन्त्र्य से घवराना कोरी कायरता है। यदि ऋषि ने "सत्यार्थ प्रकाश" में स्वतन्त्र आलोचना की है तो पुण्य कार्य ही किया है। अन्य विचार वालों को उस पर स्थिर चित्त से विचार करना चाहिए। यदि ऋषि द्वारा बतलाये गये दोष ठीक जंचें तो प्रसन्नता पूर्वक अपने धर्म का संस्कार करें। इससे तो उन्नति ही होगी। ऋषि के हृदय में विश्व प्रेम की विमल धारा प्रवाहित हो रही थी। 'वसुधैव कुटुम्बकम्' उसकी प्रधान नीति थी।

भले ही उस समय देश पर उसके सन्देश का विशेष प्रभाव न पड़ा हो, पर आज उसके सन्देश का मूर्तिमान् स्वरूप दिखाई दे रहा है। स्वराज्य का स्वर ऊँचा हो रहा है, समाज का संस्कार किया जा रहा है और धर्म की बुराइयां दूर की जा रही हैं। इस सब का श्रेय स्वामी दयानन्द को है।"

-मुस्लिम विद्वान् जहूर बख्श

स्वराज्य के संदेश वाहक

"गांधीजी से पूर्व महर्षि दयानन्द ने राष्ट्र के लिए महान् कार्य किया। उन्होंने भारतीयों को 'स्वराज्य' का मार्ग बताया। ऋषि एक पूर्ण पुरुष थे। भारत के युग निर्माता थे।" *-डॉ. पट्टाभि सीतारमैया*

हिन्दू धर्म को नवीन दृष्टि

"स्वामी दयानन्द ने हिन्दू धर्म को हमारे सामने ऐसे ढंग से रखा कि हम उस पर बुद्धिपूर्वक गौरव कर सकते हैं।"

-मौ. अब्दुलबारी

सामाजिक विद्रोह के प्रेरक

"महर्षि दयानन्द ने गुलामी के युग में धार्मिक व सामाजिक विद्रोह का झण्डा खड़ा कर अपूर्व साहस का परिचय दिया।"

-बै. नूरुद्दीन अहमद

ज्योतिस्वरूप निराकार के उपासक

निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहब ने जो संस्कृत के बड़े आलम 'विद्वान्' और वेदों के बहुत मुहक्किल (समर्थक) थे, ३० अक्टूबर ७ बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल हुआ। इलावा इली फजल (उत्तम विद्या के अतिरिक्त) निहायत नेक और दरवेश सिफ्त (साधु स्वभाव) आदमी थे। इनके मोहतकिद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे, और वेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योति स्वरूप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा को जायज (विहित) नहीं रखते थे। हम से स्वामी दयानन्द मरहूम (स्वर्गीय) की बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका निहायत अदब

(आदर) करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी (आवश्यक) था। बहरहाल वह ऐसे शख्स थे जिनका मिसाल (उपमा) इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर एक शख्स को उनकी वफात (मृत्यु) का गम (शोक) करना लाजमी है कि ऐसे बेनजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरमियान से जाता रहा।"

-महर्षि के समकालीन सर सय्यद अहमद खां

धार्मिक एकता के प्रतीक

इस वक्त स्वामीजी साहव की तस्वीर मेरे जेरे निगाह है (मेरी दृष्टि के समक्ष है)। मैं ख्याल करता हूं कि ५० साल से अधिक वक्त हुआ कि आप (श्री स्वामी दयानन्द सरस्वती) दुर्गाकुण्ड बनारस में एक बाग में कयाम फरमाते थे। इस वक्त आपकी वजै (वेष) यह थी कि लंगोट बांधते थे और तमाम बदन खुला रहता था। कुर्सी पर बैठते थे और जो लोग आपकी मुलाकात को आते थे वे भी कुर्सी पर बैठते थे। निहायत तन्दुरुस्त थे और खुश मिजाज थे। दो एक शख्स लिखे पढ़े करीब फर्श पर बैठे रहते थे। जो कुछ फरमाते थे वह लोग लिखा करते थे। तअस्सुब मजहबी (धार्मिक पक्षपात) बिल्कुल न था। एक लोहे के चूल्हें पर कुछ पकता रहता था।

-मुस्लिम शिक्षाविद् इमदाद हुसैन

सब मजहबों को लाभ हुआ

स्वामी दयानन्द जी ने भारत के लिए जो अमूल्य कार्य किया है, उससे हिन्दू कौम के साथ मुसलमान तथा अन्य दूसरे मजहब वालों को भी सीधा अथवा अन्य ढंग से लाभ हुआ। भारत के राष्ट्र निर्माण के कार्य में स्वामी दयानन्द के कार्यों ने बहुत ही महत्त्व का कार्य किया है। भारतीय उत्थान में आर्य समाज का बड़ा हाथ है। पश्चिमी सभ्यता के हमले से हिन्दुस्तानियों को सावधान करने का सेहरा यदि किसी के सिर बँधने का सौभाग्य प्राप्त है तो स्वामी दयानन्द की ओर इशारा किया जा सकता है।- *मुस्लिम नेता पीर अहमद मुन्शी*

मालिक से मिलाने वाले

"हे मालिक ! निरर्थक रूढ़ियों से हम मुक्ति पाएं-यह आपको स्वीकार न था ! हे ईश्वर ! हम आपसी मतभेद दूर करें। यह आपको अच्छा नहीं लगता था ? हम आपसे दूर चले जा रहे थे। दयानन्द हमें आपसे मिलाना चाहते थे।" *-वाजित अली*

मानव चिन्तन में क्रांति

यह समझना मूल है कि दिवंगत ने जिस कार्य को प्रारम्भ किया था, उसे आर्य समाज की चार दीवारी तक ही सीमित किया जा सकता है। उन्होंने जिन सिद्धान्तों का उद्घोष किया है, वे दूर-दूर तक फैले है और उन्होंने मानव चिनतन में एक क्रान्ति का सृजन किया है। यद्यपि हम उनके द्वारा कही गई और सिखाई गई प्रत्येक बात से सहमत नहीं है किन्तु हमें यह मानना ही होगा कि वे महान् योग्यताओं और उच्च प्रतिभा के धनी थे, जिन्होंने प्रचंड बुद्धि बल से गहन अंधविश्वासों को आधात लगाया था। हमें यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई है कि उनके अनुयायियों ने उनकी स्मृति में ऐंग्लो-वैदिक कॉलेज की स्थापना का निश्चय किया है। यह सत्य है कि ऐसे कॉलेज को स्थायी रूप देने के लिए समुचित धनराशि आवश्यक होगी। किन्तु हमें आशा है कि उनके असंख्य अनुयायियों में जो उत्साह है उसके कारण इस धनराशि का संग्रह बहुत सरल होगा। हमारा यह सुझाव है कि स्वामी जी के कतिपय सुयोग्य शिष्य उनके जीवन का वृत्तान्त सही-सही ढंग से लिखने का दायित्व ग्रहण करें और उनका एक प्रामाणिक जीवन चरित्र लिखें, जिसमें उनकी महानता सच्चे रूप में उभर सके।

-दि ट्रिब्यून (अंग्रेजी साप्ताहिक)
लाहौर, ३ एवं १० नवम्बर

उज्ज्वल रत्न

पण्डित दयानन्द का निधन समग्र शिक्षित हिन्दुत्व के लिए एक शोकदायक घटना है। वह हमारे देश के एक उज्ज्वल रत्न थे, उन पर हमारे राष्ट्र को गौरव है। उनके निर्णय में भले ही कुछ भूल रही हो किन्तु वह देश के प्रतिभा सम्पन्न पुरुष थे, इस बात का शायदा ही कोई खंडन कर पाएगा। आर्य समाज ने उनके निधन से एक ऐसा नेता खो दिया है, जिसके स्थान की पूर्ति अब न हो सकेगी।

-बंगाल पब्लिक ओपीनियन
(अंग्रेजी साप्ताहिक) कलकत्ता ३ नवम्बर

अनथक कार्यकर्ता

वह एक महान् संस्कृत विद्वान् तथा सुधार के क्षेत्र के अनथक कार्यकर्ता थे। उनका निधन सारे देश की क्षति है।

-हिन्दू आब्जर्वर (अंग्रेजी साप्ताहिक)
कलकत्ता ८ नवम्बर

नेपोलियन व सिकन्दर से महान्

महर्षि दयानन्द भारत माता के उन प्रसिद्ध और उच्च आत्माओं में से थे, जिनका नाम संसार के इतिहास में सदैव चमकते हुए सितारों की तरह प्रकाशित रहेगा। वह भारत माता के उन सपूतों में से है, जिनके व्यक्तित्व पर जितना भी अभिमान किया जाए, थोड़ा है। नेपोलियन और सिकन्दर जैसे अनेक सम्राट् एवं विजेता संसार में हो चुके हैं, परन्तु स्वामी दयानन्द उन सबसे बढ़कर थे। *-खदीजा बेगम*

मालिक से मिलाने वाले

"हे मालिक ! निरर्थक रूढ़ियों से हम मुक्ति पाएं-यह आपको स्वीकार न था ! हे ईश्वर ! हम आपसी मतभेद दूर करें। यह आपको अच्छा नहीं लगता था ? हम आपसे दूर चले जा रहे थे। दयानन्द हमें आपसे मिलाना चाहते थे।" *-वाजिद अली*

जिन्हें स्वराज्य का श्रेय प्राप्त है

"अहरार युग से भी पूर्व ९० प्रतिशत आर्य समाजी स्वराज्य के आन्दोलन में सक्रिय रूप में भाग लेते थे। तब अन्य संस्थाओं में से मुश्किल से दो-तीन प्रतिशत सदस्य भाग लेते थे। सबसे पहले आर्य समाज के सदस्य ही स्वराज्य के मैदान में उतरे थे और अपने नेता बने थे। आज भी जब अन्य लोग स्वराज्य के आन्दोलन में अधिक भाग ले रहे हैं तब आर्य समाजी सदस्यों की शक्ति सबसे अधिक है। इसका श्रेय स्वामी दयानन्द को प्राप्त है।"

-मौ. हसरत मोहानी

ब्रह्मचर्य का वैज्ञानिक स्वरूप

-डॉ. त्रिलोक चन्द
दर्शन विभाग, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

ब्रह्मचर्य क्या है ?

हमारे शास्त्रों-वेदों, उपनिषदों आदि ग्रन्थों, हमारी संस्कृति, नैतिक ग्रन्थों, धर्म ग्रन्थों, विद्यार्थियों के सम्बन्ध में लिखी गयी पुस्तकों आदि-आदि में ब्रह्मचर्य का बड़े महत्व के रुप में वर्णन किया गया है । जीवन का पहला आश्रम ब्रह्मचर्य है । ब्रह्मचर्य की चर्चा से ग्रन्थ सुशोभित हैं । ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में जो सबसे पहला प्रश्न उठता है वह यह है कि ब्रह्मचर्य क्या है ? इसके उत्तर में ब्रह्मचर्य की अनेक परिभाषाएं दी गयी हैं जिनमें से कुछ निम्नलिखित हैं ।

१) ब्रह्मणि चरतीति ब्रह्मचारी अर्थात जो ब्रह्म में विचरण करता है उसे ब्रह्मचारी कहते हैं । इसका अर्थ यह हुआ कि ब्रह्म में विचरण करना ब्रह्मचर्य है । यहाँ पर यह प्रश्न उठता है कि ब्रह्म में विचरण करने का क्या भाव है ? ब्रह्म में विचरण करने का भाव यह है कि ब्रह्म प्राप्ति की साधना करना । हर समय हरवस्तु में ब्रह्म की अनुभूति करना अर्थात हर समय ब्रह्म का ज्ञान होते रहना है । ब्रह्मचारी हर समय ईश्वर का अनुभव करता रहता है ।

वास्तव में ब्रह्म शब्द के तीन अर्थ हैं- ईश्वर, वेदज्ञान और वीर्य । इन्हीं के अनुसार ब्रह्मचर्य का अर्थ ईश्वर का साक्षात्कार करना, वेदों का ज्ञान प्राप्त करना और वीर्य की रक्षाकरना है ।

२) **ब्रहमज्ञानं तपो या अवश्यं ।**
आचरति अर्जयतियः स ब्रह्मचारी ।।

अर्थात वेदादि सद्शास्त्रों के अध्ययन के द्वारा ईश्वरीय ज्ञान की प्राप्ति के लिए जो व्यक्ति अतिशय तपश्चर्या करता है अर्थात् परिश्रम करता है और आने वाली कठिनाइयों को सहन करता है वह ब्रह्मचारी कहलाता है ।

३) वीर्य धारणं ब्रह्मचर्य अर्थात वीर्य का धारण करना ब्रह्मचर्य है ।

४) गुप्तोन्द्रियस्योपस्थस्य संयमः अर्थात् इन्द्रिय का संयम करना ब्रह्मचर्य है । इसका भाव यह है कि किसी भी प्रकार से काम का उद्भव न होने देना ब्रह्मचर्य है ।

५) ब्रह्मचर्यमुपस्थसंयमः अर्थात कामेन्द्रिय के रोकने को ब्रह्मचर्य कहते हैं । इसके अतिरिक्त ब्रह्मचर्य की और भी अनेकों परिभाषाएं दी गयी हैं । उस सभी परिभाषाओं का भाव प्रायः उपरोक्त ब्रह्मचर्य के अर्थों में ही समाहित हो जाता है ।

ब्रह्मचर्य की उपरोक्त अनेक परिभाषाओं से ऐसा ज्ञात होता है कि ब्रह्मचर्य का बड़ा व्यापक अर्थ है । ईश्वर का साक्षात्कार करने की साधना का नाम ब्रह्मचर्य है । वेदों का अध्ययन करना ब्रह्मचर्य है । इसे हम यूँ भी कह सकते हैं कि विद्याध्ययन करना ब्रह्मचर्य है । वीर्य रक्षा करना अर्थात कामेन्द्रिय पर संयम करना ब्रह्मचर्य है । इन अर्थों से यह भी प्रतीत होता है कि ब्रह्मचर्य का अर्थ काम पर संयम रखकर वेदाध्ययन करते हुए ईश्वर का साक्षात्कार करना है और वीर्य रक्षाकरने, वेदों का अध्ययन करने और ईश्वर की अनुभूति करने की साधना में आने वाली कठिनाइयों को सहन करना है । इससे ऐसा प्रतीत होता है कि वीर्य रक्षाकरने से वेदों का अध्ययन करने और ईश्वर की अनुभूति करने में सहायता मिलती है । शायद इसलिए ही काम पर रोक लगाना आवश्यक माना गया है । इस प्रकार ब्रह्मचर्य का अति विशाल स्वरुप है, परन्तु कालान्तर में केवल काम (sex) पर संयम करने को ही ब्रह्मचर्य मान लिया गया है । वर्तमान समय में ब्रह्मचर्य का अर्थ कामेन्द्रिय का संयम ही माना जाता है । अतः इस पुस्तक में आगे ब्रह्मचर्य का जो भी वर्णन किया जायेगा वह ब्रह्मचर्य का अर्थ 'काम का संयम' मानकर ही किया जायेगा, परन्तु यहाँ पर यह कह देना आवश्यक है कि काम परपूर्ण संयम तभी संभव है जबकि अन्य इन्द्रियों को भी वश में रखा जाय । यद्यपि वीर्य रक्षा तो ब्रह्मचर्यवाद का एक अंश या अंगमात्र है । ब्रह्मचर्यवाद का सम्मपूर्ण रूप तो अति विशाल है । वह एक श्रेष्ठ जीवन पद्यति भी है, कर्म शास्त्र भी, अध्यात्मशास्त्र भी और प्राकृतिक विज्ञान भी है । सब प्रसंगों मे सब प्रकार के संयम को भी ब्रह्मचर्य ही कहना चाहिए ।

ब्रह्मचर्य का महत्व

भारतीय संस्कृति में ब्रह्मचर्य को बहुत श्रेष्ठ माना गया है । प्रश्न यह उठता है कि ब्रह्मचर्य की क्या आवश्यकता है ? क्यों इसे जीवन में स्थान दिया गया है ? इस प्रश्न पर विचार करना अति आवश्यक है । निम्नलिखित तथ्यों से इन प्रश्नों के उत्तर मिल जाते हैं :-

हमारे पूर्वजों ने मनुष्य की आयु को सौ वर्ष मानकर उसे चार भागों में विभाजित किया है । इन भागों को आश्रम के नाम से जाना जाता है । प्रत्येक आश्रम पच्चीस वर्ष का माना गया है । प्रथम आश्रम का नाम ही ब्रह्मचर्य आश्रम है । यह आश्रम शेष जीवन के आधार का कार्य करता है । जिस प्रकार मकान की नींव होती है उसी प्रकार मानव जीवन की यह नींव है । इसमें मनुष्य अपने भावी जीवन की तैयारियाँ करता है । शारीरिक, बौद्धिक और आत्मिक विकास करता है । शारीरिक विकास में उसे विभिन्न तत्वों की आवश्यकता पड़ती है । मुख्यरुप से प्रोटीन की आवश्यकता पड़ती है । वीर्य में प्रोटीन ही सबसे अधिक होता है या यूँकहें कि यह प्रोटीन ही होता है तो भी अतिश्योक्ति नहीं होगी । यह प्रोटीन भी न्यूक्लियों प्रोटीन होता है जो कि शरीर की वृद्धि के लिए सबसे अधिक मुख्य है । मनुष्य का शरीर प्रथमावस्था में वृद्धि को प्राप्त होता है । अब यदि प्रथमावस्था में यह प्रोटीन वीर्य के रुप में बनकर निकलता रहेगा तो शारीरिक वृद्धि में कमी पड़ेगी और यदि यह प्रोटीन वीर्य में बदलकर नहीं निकलेगा तो यहसारी प्रोटीन शरीर के प्रत्येक अंग-प्रत्यंग की वृद्धि और पुष्टि करेगी । इससे अधिक शारीरिक विकास होगा जिससे बौद्धिक और आत्मिक विकास में सहायता मिलेगी ।परन्तु एक अवस्थाके पश्चात्सामान्य तौर पर शारीरिक अंगों की वृद्धि नहीं होती है । तभी हमारे पूर्वजों ने विवाहका समय माना है । यह स्थिति हमारे शास्त्रों के अनुसार पुरुष के जीवन में पच्चीस वर्ष और स्त्री के जीवन में सोलह वर्ष में आती है । इसलिए पुरुष की आयु विवाह के समय पच्चीस वर्ष और स्त्री की आयु सोलह वर्ष रखी गयी है परन्तु ये मान्यताएं प्राचीन समय की हैं जबकि आहार-व्यवहार शुद्ध और शक्तिदायक होता था । वातावरण भी बहुत शक्तिदायक और शुद्ध था । वर्तमान समय में यह स्थिति देर में हो सकती है । अतः पुरुषों और स्त्रियों की आयु अदिक होनी चाहिए । वैसे तो पुरुष का ३६ वर्ष व ४८ वर्ष तथा स्त्रियों का १८ वर्ष २४ वर्ष तक ब्रह्मचर्य का विधान भी किया गया है ।

ब्रह्मचर्य श्रेष्ठ जीवन की आधारशिला है ।

यह जीवन को श्रेष्ठ बनाने वाला श्रेष्ठ व्रत है। वास्तव में ब्रह्मचर्य सब आश्रमों का मूल है। उसके सुधरने से सब आश्रम सुगम हो जाते हैं और बिगड़ने से सब बिगड़ जाते हैं। अधिकतर पशु, पक्षियों में भी प्राकृतिक रुप से ब्रह्मचर्य होता है। वे ऋतुगामी होते हैं और अवस्थाविशेष के समय में ही कामोपभोग करते हैं। मनुष्य तो परमेश्वर की सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसे तो इस उत्तम व्रत का, जो कि एक आदर्श भी है, अवश्य ही नियमानुसार पालन करना चाहिए। ब्रह्मचर्य से मनुष्य दीर्घायु को प्राप्त करता है। इतना ही नहीं वह अपनी आयु को तीनगुनी चौगुनी कर सकता है अर्थात् चार सौ वर्ष तक भी सुख से जी सकता है। ऐसा ऋषि, महर्षियों का कहना है। ब्रह्मचर्य के पालन द्वारा ही समाज में स्वास्थ्य और दृढ़ता की वृद्धि होती है। केवल शारीरिक स्वास्थ्य की ही नहीं अपितु मानसिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य की भी अत्यधिक वृद्धि होती है। शुभ कर्मों का अनुष्ठान होता है। ब्रह्मचर्य के पालन से सत्य के रहस्यों का जानने में सहायता मिलती है। इसके पालन से मनुष्य अत्यन्त आनन्द में रहता है। ब्रह्मचर्य के पालन का एक बहुत बड़ा महत्व यह है कि जब मनुष्य अपना ब्रह्मचर्यव्रत पूर्ण करके गृहस्थ जीवन में प्रवेश करता है तो उसे सामान्य मनुष्य की अपेक्षा सम्भोग में बहुत अधिक सुख की प्राप्ति होती है। वह आम आदमी की अपेक्षा अधिक आयु तक काम सुख का भोग कर सकता है। उसके जीवन में प्रेम अधिक होता है। वह प्रेम के आनन्द का आनन्द प्राप्त करता है। वह अपनी पत्नि को अधिक प्यार दे सकता है। उसके परिवार में अधिक प्रेम-स्नेह होने से सुख-शांति अधिक होगी। वह उत्तम सन्तान उत्पन्न करता है।

ब्रह्मचारी पर ईश्वर की कृपा बरसती है। मानव को उत्कर्ष की ओर प्रेरित करने वाले प्रायः सभी विचारों, भावों, व्रतों, आदर्शों, नियमों और प्रकारों का समावेश 'ब्रह्मचर्य' शब्द में हो जाता है। शारीरिक और मानसिक निरोगता का तो ब्रह्मचर्य आधार ही है। ब्रह्मचर्य के पालन से ईश्वर को प्राप्त करने में अत्यधिक सहायता मिलती है। इसीलिए साधु, महात्मा, सन्त, ऋषि, महर्षि आदि परमात्मा की प्राप्ति के लिए जीवन के परम लक्ष्य मोक्ष की प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं।

उर्ध्वरेतस्

हमारे शास्त्रों में उर्ध्वरेतस् की बात कही गयी है। ब्रह्मचर्य विषय पर जो ग्रन्थ लिखे गये हैं उनमें तो उर्ध्वरेतस् एक आवश्यक और महत्वपूर्ण विषय के रुप में वर्णित किया गया है। सबसे पहले तो हम इसी पर विचार करें कि "उर्ध्वरेतस्" शब्द का क्या अर्थ लिया गया है ? उर्ध्वरेतस् का भाव यह है कि वीर्य या रज उर्ध्वगामी हो जाता है। कहाजाता है कि वीर्य या रज जननेन्द्रियों से बाहर न निकल कर सुष्मुा नाड़ी के अन्दर सो होकर ऊपर मस्तिष्क की ओर जाने लगता है। ऊपर जाकर यह ऊर्जा में परिवर्तित होता रहता हैं जिससे ब्रह्मचारी, ब्रह्मचारिणी के मुख, मस्तिष्क आदि पर औज, तेजस्विता की वृद्धि होती है। ब्रह्मचारी शक्तिशाली और आनन्दित हो जाता है। उसमें सर्व प्रकार की शक्तियों की वृद्धि होती है। इंसी क्रिया को उर्ध्वरेतस् कहा गया है। यह प्रक्रिया स्त्री और पुरुष दोनों में होती है।

वर्तमान समय में, जबहम वैज्ञानि दृष्टिकोण से इस विषय पर विचार करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि उर्ध्वरेतस् का उपरोक्त कथन पूर्णरुपेणा निराधार ौर असत्य है जबकि ऋषि, महर्षियों ने इसे माना है। विधिवत् इस विषय का वर्णन किया है। कुछ भी हो परन्तु वर्तमान समय में हमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण से विचार करना ही होगा क्योंकि इस वैज्ञानिक युग में बिना वैज्ञानिक कसौटी पर कैसे मनुष्य इसे सत्य नहीं मानेंगे।

विज्ञान की मान्यता यह है कि पुरुषका वीर्य पौरुष ग्रन्थियों (अण्डकोषों) में बनता है। विज्ञान की खोजों के अनुसार पौरुष ग्रन्थियों से कोई भी रास्ता, कोई नस, नाड़ी ऐसी नहीं है जिससे वीर्य ऊपर जाता हो। कोई सूक्ष्म से सूक्ष्म भी ऐसा मार्ग नहीं जो वहाँ से ऊपर जाता हो। वीर्य के निकलने का एक मात्र रास्ता जननेन्द्रिय है जिससे होकर वीर्य बाहर निकलता है। इसके अतिरिक्त विज्ञान के अनुसार औक कोई मार्ग नहीं है। इसलिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण से वीर्य उर्ध्वगामी होकर ऊपर जाता है और फिर औज, तेज आदि में परिवर्तित होता है, यह एक कोरी कल्पना के अतिरिक्त कुछ भी नहीं है।

स्त्री के बारे में विचार किया जाये तो उसमें पुरुष के वीर्य के समान कोई ऐसी धातु बनती ही नहीं है। प्राचीन ग्रन्थों में जो स्त्री में पुरुष के वीर्य की भांति रज की बात कही गयी है वह भी सत्य सद्धि नहीं होती है। इसका अर्थ यह हुआ कि हमारे ऋषि मुनियों की मान्यतायें असत्य हैं उन्होंने अवैज्ञानिक और निराधार बातें कही है। इससे तो उनकी महानता पर शंका उत्पन्न होती है। परन्तु वास्तविकता ऐसी नहीं है। ऋषियों का ज्ञान बहुत ही उच्च स्तर का है। त्रिकालदर्शी ऋषियों का उर्ध्वरेतस् का सिद्धान्त पूर्ण सत्य और वैज्ञानिक है। इसकी व्याख्या निम्नलिखित रुप से है-

बाल्यावस्था में मनुष्य में वीर्यका निर्माण नहीं होता है। किशोरावस्था में इसका निर्माण होने लगता है। सामान्यावस्था में इसका निर्माण बहुत धीरे-धीरे होता है अर्थात् बहुत कम बनता है परन्तु कामवासना उत्पन्न होने पर यह सामान्यावस्था की तुलना में बहुत अधिक बनता है। उस समय इसका निर्माण बहुत तेजी से होता है।

यह वीर्य जिन वस्तुओं से बनता है उनमें सबसे अधिक प्रोटीन होता है। यहाँ तक कि यदि इसे प्रोटीन हीकह दिया जाये तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। प्रोटीन भी इसमें न्यूक्लियों प्रोटी होता है। यह प्रोटीन तत्त्व शरीर निर्माण में बहुत महत्वपूर्ण होता है। शरीर की वृद्धि और विकास में इस तत्त्व का बहुत ही योगदान होता है। अब यदि प्रोटीन वीर्य न बनकर बाहर नहीं निकलेगा तो यह शरीर की वृद्धि, विकास और शक्ति की वृद्धि करेगा। इस तथ्य से अर्ध्वरेतस् की क्रिया सत्य सिद्ध हो जाती है। उर्ध्वरेतस् का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। महर्षियों की गूढ़ भाषा समझ में आ जाती है। अतः उर्ध्वरेतस् का अर्थ वीर्य का किसी नाड़ी द्वारा ऊपर चढ़ना नहीं है बल्कि जो तत्त्व नीर्य को बनाते हैं उनका वीर्य में परिवर्तन न होकर शरीर के दूसरे विकास में काम आना है। ऐसा होने से निश्चित रूप से शक्ति वृद्धि होगी। औज और तेज ब्रह्मचारी में बढ़ेंगे ही।

स्त्री के बारे में हम यूँ कह सकते हैं कि जब स्त्री ब्रह्मचारिणी रहेगी तो उसका मासिक धर्म अपेक्षाकृत कुछ बड़ी आयु में आरम्भ होगा। दूसरा तथ्य यह है कि ब्रह्मचारिणी होने पर स्त्री गर्भ धारण तो करेगी ही नहीं। ऐसा होने के कारण शरीर के वे तत्त्व जो बच्चे के शरीर के निर्माण में खर्च हो जाते हैं, स्त्री के विकास में लगेंगे जिससे उसकी शक्ति सामर्थ्य की वृद्धि होगी।

उपरोक्त के अतिरिक्त ब्रह्मचर्य के पालन करने से स्त्री और पुरुष दोनों में ही प्राणशक्ति अद्योगामी न होकर उर्ध्वगाषी होगी। ऐसा होने से मनुष्य शारीरिक और मानसिक रुप से अधिक स्वस्थ दीर्घ जीवी और श्रेष्ठ गुणों से सम्पन्न होगा।

ब्रह्मचर्य के साधन

ब्रह्मचर्य विषय पर जब हम विचार करते हैं तो इस सम्बन्ध में सबसे मुख्य बात यह है कि ब्रह्मचर्य के क्या साधन हैं ? कारण यह है कि ब्रह्मचर्य तभी सम्भव होगा जबकि ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन किया जायेगा । यह एक कटु सत्य है कि बिना ब्रह्मचर्य की साधना किये कोई ब्रह्मचारी नहीं रह सकता है । ब्रह्मचर्य के साधन बहुत है जिनमें से कुछ मुख्य साधना का यहाँ चर्चा की जा रही है जो कि निम्न लिखित हैं :-

१- **प्रेम और भक्ति :-** कामवासना, प्रेम और भक्ति तीनों का आपस में अन्तःसम्बन्ध है । इन तीनों में से प्रेम और भक्ति तो शुद्ध भावनात्मक हैं और दोनों एक ही क्षेत्र में आती हैं । सामान्य प्रेम अर्थात् किसी के भी प्रति प्रेम, प्रेम है और ईश्वर के प्रति प्रेम भक्ति है । कामवासना भी प्राण की एक निम्नस्तर की क्रिया है । ऐसा प्रतीत होता है कि यह भी भावना की ही क्रिया है । मूलरूप से हम कह सकते हैं कि कामवासना, प्रेम और भक्ति एक ही प्रक्रिया के तीन रूप हैं या एक ही प्रक्रिया के तीन स्तर हैं । इनमें से सबसे निचला स्तर काम है । दूसरा स्तर प्रेम है और तीसरा अर्थात् सबसे ऊँचा स्तर भक्ति है । इन तीनों का योग मनुष्य में बराबर ही रहता है । यदि किसी मनुष्य में काम अधिक है तो प्रेम और भक्ति कम होंगे । यदि प्रेम अधिक है तो काम और भक्ति कम होंगे और इसी प्रकार जिसमें भक्ति अधिक है तो उसमें काम और प्रेम कम होंगे । यह भी हो सकता है कि कोई सा स्तर अधिक हो और कोई दूसरा सामान्य तथा तीसरा कम हो । दूसरा तथ्य यह है कि इन तीनों में से किसी को भी किसी दूसरे में परिवर्तित किया जा सकता है । हाँ यह एक अलग बात है कि निचले स्तर को ऊपरी स्तर में परिवर्तित करना अपेक्षाकृत एक उचित और स्वाभाविक क्रिया है । इन तथ्यों को हम गणित के अनुसार निम्न लिखित उदाहरण के द्वारा भली-भाँति समझ सकते हैं- मान लिजिए कि इन तीनों का योग १०० है । एक मनुष्य में ४० प्रतिशत काम है । ४० प्रतिशत प्रेम है और २० प्रतिशत भक्ति है जिनका कुल योग १०० प्रतिशत है । उसमें १० प्रतिशत काम की वृद्धि हो जाती है तो १० प्रतिशत ही प्रेम या भक्ति कम हो जायेगा । इसी प्रकार यदि उसमें १५ प्रतिशत प्रेम की वृद्धि हो जाती है तो १५ प्रतिशत ही काम की कमी हो जायेगी या उसमें २५ प्रतिशत ही काम की कमी हो जायेगी या उसमें २५ प्रतिशत पंक्ति की वृद्धि हो जाती है तो २५ प्रतिशत हीकाम कम हो जायेगा । भाव यह है कि कुल योग १०० ही रहेगा । प्रेम बढ़े या भक्ति परन्तु काम ही कम होगा । जबकाम बढ़ेगा तो प्रेम या भक्ति कोई सा उतना हीकम हो जायेगा । यह भी सम्भव है कि प्रेम बढ़ने से भक्ति कम हो जाये और भक्ति बढ़ने से प्रेम कम हो जाये और ऐसा पाया भी जाता है परन्तु अधिकतर सम्भावना यही है कि इन दोनों में से किसी एक के बढ़ने या घटने से काम ही बटेगा या बढ़ेगा । ऐसा भी हो सकता है कि प्रेम और भक्ति दोनों बढ़ें । ऐसी स्थिति में उन दोनों के बढ़ने का योग जितना होगा काम उतना ही कम हो जायेगा । अंग्रेजी में इस परिवर्तन को रूपान्तरण (Sublimation) कहा जाता है । निम्न चित्र के द्वारा इस विषय के बारे में कुछ प्रकाश डाला जा सकता है -

इस चित्र में यह दिखलाया गया है कि प्रेम और भक्ति आपस में अधिक निकट है । वे एक ही शाखा के दो भाग हैं जबकि काम एक अलग ही शाखा है ।

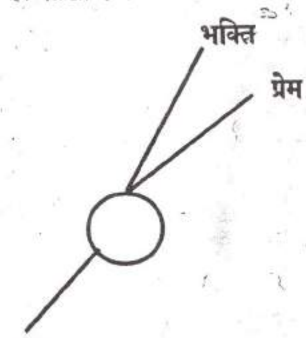

समाज में ऐसा देखने में भी आता है कि जिन मनुष्यों में काम अधिक होता है उनमें प्रेम और भक्ति वाला पक्ष कम होता है और जिनमें प्रेम था भक्ति वाला पक्ष अधिक होता है उनमें काम कम होता है । वे कामवासना के हब्सी नहीं होते हैं । वर्तमान समय में प्रेमविवाह की प्रथा बहुत बढ़ रही है परन्तु वास्तविकता यह है कि इनमें से अधिकतर प्रेमविवाह होते ही नहीं हैं । कोई एक दो ही यथार्थ रूप में प्रेम विवाह होते होंगे । सच्चाई यह है कि युवा अवस्था में शारीरिक आकर्षण होता है जो कि स्वाभाविक भी है और जब कुछ समय बाद वह आकर्षण कम हो जाता है तब ऐसे विवाहों का विच्छेद होते हुए भी बहुत देखा जाता है या ऐसे प्रेमियों का जीवन प्रेम के स्थान पर क्लेशों से युक्त हो जाता है । अतः ब्रह्मचर्य की रक्षाहेतु भक्ति अथवा प्रेम की वृद्धि करना एक बहुत ही प्रबल साधन है । हाँ यह एक अलग बात है कि यह प्रेम या भक्ति किसके प्रति हो । यह देश, धर्म, संस्कृति, माता-पिता, गुरू, ईश्वर आदि-आदि किसी के प्रति भी हो सकती है । जिन मनुष्यों में भक्ति अथवा प्रेम अत्यधिक बढ़ जाता है उन्हें ब्रह्मचर्य की रक्षाके लिए अन्य साधनों की आवश्यकता ही नहीं रहती है, उनका ब्रह्मचर्य स्वतः ही सिद्ध हो जाता है । आचार्य शंकर, महर्षि दनानन्द, भक्त शिरोमणी मीरा, सूरदास और तुलसीदास की सारी कामवासना भक्ति में परिवर्तित हो गयी थी । इन्होंने स्वतः ही ब्रह्मचर्य अवस्थ को प्राप्त कर लिया था । सारा काम उर्ध्वगामी हो गया था और फिर उसका सृजन हुआ जन सेवा, समाज सेवा, प्रभु भक्ति के भजनों में, पद्यों में, दोहे और चौपाईयों में, तरह-तरह के अन्य साहित्य में आदि-आदि । स्वामी रामकृष्ण परमहंस जी के बारे में कहा जाता है कि माँ शारदा जी, जो कि उनकी धर्मपत्नि थी और उनके साथ ही रहती थीं परन्तु वे उन्हें कभी-कभी माँ कहकर पुकारते थे । ऐसा कहाजाता है कि उनके कामुक सम्बन्ध नहीं थे । महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की ईश्वर भक्ति, देशभक्ति और धर्मभक्ति तथा मानवसेवा आदि ने उनके ब्रह्मचर्य को पूर्ण रखा । ब्रह्मचर्य की रक्षा का यह एक सूक्ष्म और अन्तरंग साधन है ।

इमां त्वमिन्द्र मीढ्वः सुपुत्रां सुभागां कृणु ।
दशास्यां पुत्राना धेहि पतिमेकादशं कृधि ।

-ऋग्वेद मंडल १०, सूक्त ८५ मन्त्र संख्या ४५

एक कथा है जिनका मूल श्रेत, ऋग्वेद का उपरोक्त मन्त्र है जिसका वर्ण निम्नलिखित प्रकार से है । कहते है एक बार एक ऋषि ने एक स्त्री को आशीर्वाद दिया जिसमें उन्होंने कहा कि तू दस पुत्रों की माँ हो और ग्यारहवाँ तेरा पति ही तेरा पुत्र होवे । आज यदि आप किसी स्त्री को यह कह देवें कि तेरा पति ही तेरा पुत्र होतो वह या तो आपको चप्पल मारेगी या गाली देगी (भला बुरा कहेगी) अथवा पागल कहेगी । परन्तु ऋषि ने तो यही कहा और कहा भी प्रसन्न होकर आशीर्वाद के रूप में । तो क्या ऋषि ने भी अनुचित कहा जिसपर कि बुरा लगे ? क्या ऋषि किसी को ऐसा अभद्र आशीर्वाद दे सकते थे ? नहीं, कदापि नहीं । इस वाक्य का अर्थ बड़ा गूढ़ है । इसके पीछे बड़ा ही रहस्य है । इसका अर्थ अप्रत्यक्ष रूप से लगता है । आगे चलकर कबीर ने भी ऐसी भाषा का प्रयोग किया जिन्हें कबीर की उलटबासिया कहते हैं । इस आशीर्द के अर्थ का भाव बहुत ही वैज्ञानिक है जो रूपान्तरण

से सम्बन्धित है । इसका भाव यह है कि जब तू पहले पुत्र को जन्म देगी तो तेरा पुत्र के प्रति प्रेम कुछ भड़ जायेगा । अब यदिपुत्र के प्रति प्रेम बढ़ जायेगा तो काम (Sex) उतना हीकम हो जायेगा । जबदूसरे पुत्र (दूसरी सन्तान) को जन्म देगी तो प्रेम और बढ़ जायेगा और जितना प्रेम बढ़ जायेगा काम (Sex) उतना ही और कम हो जायेगा । इस प्रकार बढ़ते-बढ़ते जब तू दस पुत्रों को जन्म दे चुकी होगी तो उस समय तेरा काम पूर्णतया समाप्तहो जायेगा और केवल प्रेम ही प्रेम रह जायेगा । काम पूर्णरूप से समाप्त हो जायेगा । ऐसी अवस्था में तेरा तेरे पति के प्रति भी वही शुद्ध प्रेम होगा जो तेरे (तुम्हारा अपने) पुत्रों से है । उस समय तू प्रेम रूपा बन ायेगी । पति के प्रति प्रेम और पुत्र के प्रति प्रेम में कोई अन्तर ही नहीं रहेगा । इसलिए पति भी तुझे पुत्र जैसा ही प्रिय होगा । इसलिए वह भी पुत्ररूप ही हो जायेगा क्योंकि पति के प्रति जो प्रेम होता है वहकाम से मिश्रित होता और पुत्र के प्रति जो प्रेम होता है वह शुद्ध प्रेम होता है । यदि पति के प्रति भी वही शुद्ध प्रेम हो तो पति और पुत्र दो एक हीस्तर के हो गये । यही ऋषि के आशीर्वाद का अर्थ है । साथ ही यह भी एक तथ्य है कि जीवन की यह अवस्था आ जाना जब केवल प्रेम या भक्ति ही रह जाय बहुत ही आनन्द दायक है । इस अवस्था का एक-एक क्षण आनन्द से भरा हुआ होता है । आध्यात्मिक दृष्टि से यह बहुत ऊँची अवस्था है । ऐसा ऊँचा आशीर्वाद दिया था ऋषि ने उस स्त्री को ।

२) **व्यसत रहना** :- ब्रह्मचर्य रक्षा के लिए दूसरा महत्वपूर्ण साधन व्यस्त रहना है । जिस व्यक्ति का मन अपने कार्य में व्यस्त रहेगा उसे काम अपेक्षाकृत कम सतायेगा । जिसे कुछ काम नहीं होगा उस पर काम का अधिक आक्रमण होगा । कहा जाता है कि निकम्मे मनुष्यों के सन्तान अधिक उत्पन्न होती है । इसका कारण स्पष्ट है कि खाली रहने के कारण मन बार-बार काम के आक्रमण का शिकार होता रहता है । एक बार महर्षि दयानन्द सरस्वती जी से किसी ने प्रश्न पूछा था, "महाराज क्या आपको कभी काम नहीं सताता है" ? महाराज ने उत्तर दिया, "मैं अपने कार्यों में इतना व्यस्त रहता हूँ कि मन कभी खाली ही नहीं रहता है । हो सकता है कि कभी काम आया हो परन्तु मन के खाली न रहने के कारण उसे वापिस ही लौट जाना पड़ा होगा । इसलिए मुझे जहाँ तक ज्ञात है मुझ पर कभी काम का आक्रमण नहीं हुआ है । महर्षि जी अपने कार्यों में अत्यधिक व्यस्त रहते थे । उनके सोने, जागने आदि तक का समय निश्चित रहता था । उपरोक्त कथन से यह भली-भाँति सिद्ध हो जाता है कि व्यस्त रहना ब्रह्मचर्य साधना में अत्यधिक सहायक है ।

३) **भोजन** :- (क) ब्रह्मचर्य साधना में ही नहीं अपितु भोजन तो प्राणीमात्र के जीवन का अनिवार्य साधन है । ब्रह्मचर्य साधना में भी इसका विशेष महत्व है । भोजन के महत्व विना ब्रह्मचर्य साधना प्रायः असम्भव है । ब्रह्मचारी को भोजन के सम्बन्ध में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है :- (क) ब्रह्मचर्य के लिए सात्विक आहार ही उपयुक्त है । अतः ब्रह्मचारी को सात्विक भोजन ही ग्रहण करना चाहिए । सात्विक भोजन वह होता है जो हल्का, ताजा और सुपाच्य हो । साथ ही वह पौष्टिक भी हो तो और भी अच्छा है । जैसे गेहूँ, चाव, मूँग, जौं आदि अन्न, दूध, सब्जियाँ, ताजे व पके हुए फल इत्यादि सात्विक भोजन में आते हैं । पीने का जल भी भोजन का ही एक अंग है । वह भी शुद्ध होना चाहिए । यह भी एक तथ्य है कि सात्विक प्रकृति वाला भोजन भी यदि आवश्यकता से अधिक खाया जाता है तो वह भी राजसिक और तामसिक प्रभाव उत्पन्न करता है । भूख लगने पर ही भोजन ग्रहण करना चाहिए । जो भोजन विना भूख के ही खाया जाता है वह भी शरीर और मन में कुप्रभाव ही उत्पन्न करता है ।

ख) व्रह्मचारी को राजसिक ौर तामसिक भोजन से बचना चाहिए । राजसिक भोजन वे होते हैं जोउत्तेजना और गर्मी उत्पन्न करते हैं । जैसे मिर्च, मसाले, चाय, ज्यादा खट्टे, उत्तेजक, प्याज, लहसुन, मछली, माँस आदि । तामसिक भोजन वे होते हैं जो शरीर और मन में जड़ता उत्पन्न करते हैं । जैसे भारी व बासी भोजन, सड़े हुए फल, अत्यधिक भोजन व सभी प्रकार के माँसाहार, शराब आदि-आदि । यदि ब्रह्मचारी राजसिक और नामसिक आहार करेगा तो फिर ब्रह्मचर्य साधना में बाधा उत्पन्न होगी ।

ग) ब्रह्मचारी को भोजन शरीर की रक्षा व अपनी साधना के उद्देश्य से करना चाहिए न कि स्वादके वशीभूत होकर । कारण यह है कि जब भोजन स्वाद के लिए किया जायेगा तो भोजन का संयम ही प्रायः समाप्त हो जायेगा । सच्चाई यह है कि भोजन का स्वाद तो भूख में निहित है । जब भूख लगी होती है तो सामान्य भोजन भी स्वादिष्ट लगता है और भूख न होने पर स्वादिष्ट भोजन भी स्वाद नहीं लगता है ।

घ) ब्रह्मचारी को नियमित भोजन करना चाहिए । कभी कुछ खा लिया, कभी कुछ ऐसा नहीं करना चाहिए । दो बार भोजन और एक बारप्रातः का नाश्ता आमतौर से पर्याप्त है ।

४) **प्राणायाम** :- ब्रह्मचर्य का एक और प्रवल साधन प्राणायाम है । यह एक स्थूल साधन है । कामवासना एक प्राणिक भूख है । प्राणायाम के द्वारा जब प्राण का निरोध हो जाता है तो कामेच्छा भी समाप्त हो जाती है । यदि किसी समय काम जागृत हो रहा हो और उस समय बैठकर प्राणायाम कर लिया जाय तो काम का आवेग समाप्त हो जाता है इसे कोई भी परीक्षण करके देख सकता है । ऐसा नहीं है कि काम का आवेग सदा के लिए रुक जाता है परन्तु इतना अवश्य है कि प्रतिदिन नियमित रूप से प्राणायाम करते रहने से कामवासना पर विजय प्राप्त करने में अत्यधिक सहायता मिलती है । ब्रह्मचारी को अपने ब्रह्मचर्य की रक्षा हेतु प्रतिदिन नियमित रूप से प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए । हाँ इतना अवश्य है कि प्राणायाम किसी अनुभवी से निधिपूर्वक सीखकर ही करना चाहिए । बिना सीखे वैसे ही प्राणायाम करने से प्रायः हानियाँ हो जाती हैं ।

५) **ध्यान** :- प्राणायाम से भी अधिक प्रभाव ध्यान का होता है । ब्रह्मचर्य रक्षाका यह एक सूक्ष्म और प्रवलतम साधनों में से एक है । ध्यान एकाग्रता का ही दूसरा नाम है । ध्यान से ज्यों-ज्यों मन स्थिर होता जाता है त्यों-त्यों ब्रह्मचर्य स्वतः ही सिद्ध होता जाता है । एकाग्रता की ऊँची अवस्था अर्थात् समाधि के स्तर पर तो ब्रह्मचर्य के लिए किसी अन्य साधन की आवश्यकता ही नहीं रहती है । स्वतः ही काम पर विजय प्राप्त हो जाती है ।

वास्तव में ब्रह्मचर्य का सम्बन्ध शरीर, प्राण, इन्द्रियाँ और मन इन चारों से है । शरीर की स्थिरता, प्राण की स्थिरता, इन्द्रियों और मन की स्थिरता सभी ब्रह्मचर्य रक्षा में सहायक हैं । शरीर की स्थिरता के लिए आसन, प्राण की स्थिरता के लिए प्राणायाम, इन्द्रियों की स्थिरता के लिए प्रत्याहार और मन की स्थिरता के लिए ध्यान है । इनमें से प्रत्येक क्रिया शेष अन्य तीन के लिए भी सहायक होती है । हाँ यह अवश्य है कि जो क्रिया जितनी अधिक सूक्ष्म होती है उसका प्रभाव उतना ही अधिक होता है । जैसे आसन सवसे स्थूल है तो उसका प्रभाव सबसे कम होता है और ध्यान

सबसे सूक्ष्म है तो उसका प्रभाव सबसे अधिक होता है। इस तथ्य को हम निम्नलिखित चित्र द्वारा भली-भाँति जान सकते हैं-

६) **खेल :-** खेल ब्रह्मचर्य रक्षा में सामान्य रूप से सहायक है परन्तु इसके लिए वें खेल ही उपयोगी हैं जिनमें कि व्यायाम और मनोरंजन दोनों एक साथ होते हो। वें हैं- जैसे कबड्डी, वालीबाल, क्रिकेट, हॉकी आदि-आदि। न कि ताश, शतरंज आदि। कारण यह है कि व्यायाम के साथ मनोरंजन होने से प्राण और मन की उमंगों की पूर्ति हो जाती है। मन मनोरंजन चाहता है। जिस मनुष्य के जीवन में किसी भीप्रकार का कोई मनोरंजन नहीं होता है वे मनुष्य काम की ओर अधिक आकर्षित होते हुए पाये गये। मनोरंजन तो यद्यपि ताश, शतरंज आदि जैसे खेलों में भी होता है परन्तु उनमें व्यायाम न होकर उल्टे आलस्य की वृद्धि होती है जो कि हानि कारक है। साथ ही ऐसे खेलों से अकर्मन्यता की भी वृद्धि होती है। अतः जिन खेलों में व्यायाम और मनोरंजन एक साथ होते हो, वे ही खेल ब्रह्मचर्य रक्षा में सहायक हैं। यह बड़ी ही प्रसन्नता का विषय है कि वर्तमान समय में विश्वभर में खेलों को महत्व दिया जा रहा है।

७) **सत्संग :-** ब्रह्मचारी को सदा यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि सदैव अच्छे मनुष्यों का संग करे। कभी भी भूलकर भी बुरे लोगों के सम्पर्क में न रहे। ऐसे मनुष्यों के सम्पर्क में रहे जिनसे ब्रह्मचारी रहने में सुविधा मिले। ब्रह्मचारी रहने की प्रेरणा मिले। जो सदैव सन्मार्ग की ओर प्रेरित करें। कामुक, आवारा, दुर्व्यसनी, शराबी, आलसी आदि व्यक्तियों को अपनी मित्र मंडली में सम्मिलित न करें। सत्संग से ब्रह्मचारी रहने की प्रेरणा मिलेगी और कुसंग से ब्रह्मचर्य खंडित ही नहीं होगा अपितु समाप्त हो जायेगा।

८) **स्वाध्याय :-** काम पर संयम रखने के लिए यह आवश्यक है कि ऐसे ग्रन्थों का अध्ययन किया जाय जिनसे ब्रह्मचर्य रहने की ओर प्रवृत्ति होवे। अन्दर से वीर्य रक्षाकरने के लिए प्रेरणा मिले, उत्साह बढ़े। जैसे यदि हनुमान, भीष्म, दयानन्द आदि महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ेंगे तो ब्रह्मचर्य रहने की प्रेरणा मिलेगी। ब्रह्मचर्य के महत्व का अध्ययन करेंगे तो उससे ब्रह्मचर्य रहने के लिए उत्साह बढ़ेगा। आदि-आदि।

कभी भी कामुक साहित्य नहीं पढ़ना चाहिए। अश्लील पुस्तके पढ़ने से काम जागृत होता है जिसके परिणामस्वरुप कामुक प्रवृत्ति होती है।

काम जागृत होने के कारण

मनु महाराज ने आठ प्रकार के मैथुन माने हैं। वास्तव में वे काम जागृत होने के कारण हैं।

मनुष्य में काम की जागृति दो कारणों से होती है-

अ) आन्तरिक कारण और (आ) बाह्य कारण।

आन्तरिक कारण :- आयुर्वेद के अनुसार प्राणी के अन्दर चार मूलभूत ऐसी प्रवृत्तियाँ होती हैं, जिनकी पूर्ति करने पर फिर आवश्यकता होती है। ये हैं भूख, प्यास, नींद और कामेच्छा। मनुष्य भोजन करता है, परन्तु अगले समय फिर भूख लगती है। व्यक्ति एक रात में सोता है तो अगली रात में फिर नींद आती है। कहने का भाव यह है कि ऐसा नहीं है कि एक बार पूर्णरूप से पूर्ति करने के पश्चात् फिर दोबारा आवश्यकता नहीं होती है। उसी प्रकार काम भी है। यह एक मूल प्रवृत्ति है। इसलिए समय आने पर स्वाभाविक रूप से कामेच्छा होती है। मनुष्य ही नहीं अन्य प्राणियों में भी ऐसा होता है। अतः कामवासना के जागृत होने का यह भीतरी कारण है। अन्दर अधिक वीर्य इकट्ठा होने से भी काम जागृत होने लगता है जो कि स्वप्नदोष का स्वाभाविक कारण होता है। उपरोक्त के अतिरिक्त कामवासना बाह्य कारणों से भी जागृत होती है। ये बाह्य कारण हैं। १) कामुख साहित्य पढ़ना। २) कामुक बातें करना। ३) कामुक दृश्य देखना। ४) मनु के अनुसार आठ प्रकार के मैथुन। इन कारणों से भी मनुष्य का काम जागता है। भीतर की आवश्यकता न होने पर भी इन बाहरी कारणों से काम जागृत हो जाता है।

हमारे पूर्वजों ने दोनों कारणों पर विजय पाने के उपाय सात्विक आहार करने का निर्देश दिया गया है। आसन, व्यायाम आदि करने की सलाह दी गयी है। प्राणायाम ब्रह्मचर्य रक्षा का प्रबल साधन बतलाया गया है। योगदर्शन के अनुसार उससे सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त होती है। इसलिए प्राणायाम करने को कहा गया है। इसके अतिरिक्त रपमात्मा की भक्ति (ईश्वरभक्ति) ब्रह्मचर्य रक्षा में विशेष सहायक है। सदाचार नियमित और संयमित जीवन सहायक है। ध्यान अत्यधिक लाभकारी है ही।

बाहरी कारणों से काम के जागरण को रोकने के लिए ऐसे दृश्य न देखें जिनसे काम का उदय होवे। उदाहरणार्थ अश्लील चित्र देखना, ऐसा साहित्य न पढ़ें जिनसे काम का उद्भव होवे। स्त्री का पुरुष के बारे में सोचना, देखना, चिन्तन करना, मिलना-जुलना, एकान्त में बातें करना आदि अनुचित है। यहीं बातें ब्रह्मचारी पुरुष की स्त्री के सम्बन्ध में हैं। प्राचीन काल में हमारे भारतवर्ष में गुरूकुल शिक्षा संस्थाओं के रूप में होते थे जो नगरों से पूर्णरूप से अलग ब्रह्मचर्य रक्षा में सहायक होते थे। लड़के और लड़कियों के गुरूकुल अलग-अलग और दूर-दूर होते थे ताकि वे एक दूसरे को देख भी न सकें। उपरोक्त के कारण कोई भी बाह्य कारण ऐसा नहीं बन पाता था जिससे कि कामवासना जागे।

यह सत्य है कि जब तक ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन नहीं किया जायेगा तब तक ब्रह्मचर्य सम्भव नहीं हो पायेगा। हमारे भारतवर्ष में ब्रह्मचर्य के पालन के लिए कुछ सम्प्रदायों में ऐसी बाते कही गयी हैं जिनसे जबरदस्ती ब्रह्मचर्य की रक्षा करने का प्रयास है जो कि असफल ही होते हैं। उदाहरण के रूप में बैरागी (एक-दो) सम्प्रदायों में गुरू जब शिष्य को दीक्षा देता है तो उसे लकड़ी या किसी धातु का ऐसा लंगोट पहनाया जाता है जिससे मल-मूत्र विसर्जन तो किया जा सके परन्तु सम्भोग आदि न कर सके। इस लंगोट में जंजीर तगड़ी की जगह पहनाई जाती है और उसमें ताला बन्द कर दिया जाता है तथा चाबी गुरु अपने पास रख लेता है। यदि केवल लंगोट से ही ब्रह्मचर्य सिद्ध करना चाहते हैं और ब्रह्मचर्य के अन्य साधनों का पालन नहीं करते हैं तो यह एक पागल बनाने का साधन होगा या फिर शिष्य ताले की दूसरी चाबी बनवा लेगा। मैने एक वार योग के विद्यार्थियों से पूछा कि ऐसी स्थिति में शिष्य क्या करेगा ? कई विद्यार्थियों ने मेरे प्रश्न का उत्तर देने के लिए हाथ उठाये। मैंने एक से पूछा तो उसने तुरन्त उत्तर दिया ''सर डुप्लिकेट चाबी बनवा लेगा''। अन्यों के भी प्रायः ऐसे ही उत्तर थे।

दूसरा उदाहरण मणि में छल्ला आदि डाल देना है परन्तु इससे हस्तमैथुन तो कर लेते हैं।

''अष्टमैथुन''

मनु जी महाराज ने आठ प्रकार के मैथुनों

से ब्रह्मचारी को दूर रहने के लिए आदेश दिया है। ये आठ प्रकार के मैथुन निम्नलिखत हैं :-

स्मरणं कीर्तनं केलिः, प्रेक्षणं गुह्यभाषणम्। संक्ल्पोऽध्यवसायश्च, क्रियानिष्पत्तिरेव च॥

पुरुषों के लिए स्त्रियो के और स्त्रियों के लिए पुरुषों के दर्शन करना अर्थात् देखना, स्पर्श करना, स्मरण करना अर्थात् उनके बारे में विचार करना, साथ खेलना, कीर्तन अर्थात् उनके साथ बातें करना, उनके बारे में संकल्प अर्थात् चिन्तन करना, उनके लिए प्रयत्न करना और सम्भोग करना ये आठ प्रकार के मैथुन हैं। इनसे बचकर रहना ही पूर्ण ब्रह्मचर्यव्रत का परिपालन है।

यहाँ पर एक प्रश्न यह उठता है कि सम्भोग को तो मैथुन कहा जाता है। उससे ब्रह्मचर्य खण्डित होता है, परन्तु देखने, बातें करने यहाँ तक कि स्मरण करने आदि को भी मैथुन क्यों कहा गया है ? इसका कारम यह है कि काम बहुतही प्रबल होता है। यहाँ तक कहा गया है कि कामेच्छा सब इच्छाओं से अधिक प्रबल होती है। देखने, सुनने, विचार आदि करने मात्र से यह जागृत हो जाती है और फिर प्रबल हो उठती है और मनुष्य काम के आवेग में बह जाता है। काम जागृत होने से तेजी से वीर्य का निर्माण होता है जिससे उर्ध्वरिता का पतन होता है और अन्तोगत्वा इससे ब्रह्मचर्य प्रायः खण्डित हो ही जाता है। इसीलिए पूर्ण ब्रह्मचारी के लिए उर्ध्वरिता के लिए उपरोक्त आठों प्रकार के मैथुनों से दूर रहने के लिए कहा गया है। इस सम्बन्ध में निम्नलिखित उदाहरण बहुत ही महत्वपूर्ण है :- यह एक कहानी है। कहा जाता है कि एक बार व्यास जी अपने शिष्यों को पढ़ा रहे थे। अध्ययन का विषय ब्रह्मचर्य था। गुरुजी ने बतलाया कि ब्रह्मचर्य की पूर्ण रक्षाके लिए पुरुष को स्त्री से और स्त्री को पुरुष से सदैव अलग ही रहना चाहिए। एक दूसरे के बारे में विचार तक भी नहीं करना चाहिए। गुरुजी के उपदेश पर एक शिष्य को विश्वास न हुआ और उसने गुरुजी से प्रश्न किया कि पूज्य गुरुजी महाराज देखने और सुने मात्र आदि से ब्रह्मचर्य कैसे खण्डित हो जाता है ? सिष्य के कहने का भाव यह था कि ऐसा होने मात्र से ब्रह्मचर्य की सिद्धावस्था में तो नहीं होता परन्तु साधक की अवस्था में ऐसा ही होता है क्योंकि देखने सुनने आदि से काम जागृत हो जाता है। महान गुरु ने शिष्य को इस सम्बन्ध में अनेक उदाहरण देकर समझाय परन्तु शिष्य को गुरुजी महाराज की बात पर विश्वास ही न हुआ। वह कहने लगा कि पूज्य गुरुजी महाराज यें बातें तो व्यर्थ की जान पड़ती है। मेरी समझ के अनुसार ऐसा नहीं हो सकता है।

गुरूदेव ने यह जान लिया कि शिष्यको विश्वास नहीं हो रहा है। श्रेष्ठ गुरू का यह कर्तव्य होता है कि वह अपने शिष्यों को ज्ञान से परिपूर्ण करे, उन्हें सन्मार्ग पर चलाये और हर दृष्टिकोण से ुन्हें योग्य बनाये। शिष्य हीगुरू की पूँजी होते हैं। शिष्यों को योग्य बनाकर गुरू अपने कर्तव्य से मुक्त होता है। शिष्यों की योग्यता के कारण ही गुरू को लोक में यश की प्राप्ति होती है। जैसे स्वामी विरजानन्द व स्वामी रामकृष्ण परमहँस की स्वामी दयानन्द व स्वामी विवेकानन्द के कारण हुई। किसी गुरू की कसौटी उसके शिष्य ही तो होते हैं। यद्यपि वर्तमान परिस्थितियों के कारण ऐसा प्रायः नहीं हो रहा है परन्तु प्राचीन भारत में ऐसा ही होता रहा है। व्यास जी महाराज के शिष्य को जब उनके उपदेश का विश्वास न हुआ तो उन्होंने अपना उत्तरदायित्व समझते हुए शिष्य के अज्ञान को मिटाना तय कर लिया और उन्होंने इसके लिए एक योजना बनाई।

कुछ दिनों के पश्चात् उन्होंने उस शि,ड्य को एक स्थान पर जाने को कहा। गुरूदेव ने यह भी कहा कि उस स्थान पर अमुक व्यक्ति को यह सूचना देकर तुरन्त लौट आना है। वह स्थान कुछ दूर था और रास्ता जंगल से होकर जाता था। गुरूजी महाराज ने शिष्य को ऐसे समय भेजा सिसे उसके लौट कर आने में देर हो जाये।

पूज्य गुरूवर का आदेश पाकर शिष्य सन्देश लेकर चल दिया। उसने नियत स्थान पर जाकर निश्चित व्यक्ति को गुरुदेव का सन्देश दिया और वापिस गुरूकुल के लिए चल पड़ा। रास्ते में जब वह वन से होकर आ रहा था तो शाम हो गयी। बादल होने के कारण रास्ता भी स्पष्ट दिखलाई नहीं पड़ रहा था। हवायें कुछ ठंडी-ठंडी चल रही थी। शिष्य ऐसे में कुछ समझ नहीं पा रहा था कि वह क्या करे। सहसा उसे कुछ दूर पर एक कुटिया दिखलाई दी। उसने सोचा "अब रात को इसी कुटिया में जाकर विश्राम किया जाये और फिर प्रभात होने पर प्रस्थान कर लूँगा" यह सोचकर वहकुटिया की ओर चल दिया। पास जाकर उसने देखा कि कुटियापूर्णतया सुरक्षित है ौर खाली भी है। अपने निर्णय के अनुसार वह कुटिया में बैठ गया। कुछ देर बाद उसने देखा कि कुछ ही दूर पर एक बहुत सुन्दर युवती बैठी हुई रो रही है। ब्रह्मचारी ने जाकर उसके रोने का कारण पूछा। उस सुन्दरी ने कहा कि वह अकेली है, उसे डर लग रहा है, रात हो रही है, वर्षा भी होने वाली है। इसलिए वह दुःखी हो रही है। बह्मचारी ने कह, "आप चलकर इस कुटिया में विश्राम कीजिए"। सुइदरी ने कहा, "उसमें तो आप है और ऐसी स्थिति में मैं कैसे उसमें रह सकती हूँ"। ब्रह्मचारी ने कहा "आप अन्दर कमरे में विश्राम कीजिए और मैं बाहर बरामदे में ही रह लूँगा"। तव वह स्त्री उस कमरे में आकर बैठ गयी। ब्रह्मचारी ने कहा, "आप दरवाजा बन्द कर लीजिए और अन्दर से कुन्डी भी लगा दीजिए और शर्त यह है कि मुझे कोई हिंसक पशु भी मार करके खा जाय तो भी दरवाजा न खोलिए"। स्त्री ने दरवाजा बन्द करके अन्दर से कुन्डी बन्द करदी और ब्रह्मचारी शिष्य कबरामदे में ही बैठ गया। वर्षा हो रही थी। बड़ी ही सुहानी हवा बह रही थी। चारो ओर सन्नाटा था। बस केवल वर्षा होने का रिमझिम शब्द हो रहा था। कभी-कभी किसी जंगली पशु या पक्षी के बोलने की आवाज आ जाती थी। ब्रह्मचारी शि,ड्य ने सुन्दर युवती को देखा था, उससे बातें की थीं। उसके मन में उसके बारे में विचार आया। ब्रह्मचारी ने उस विचार को स्वीकृति दे दी। उधर मौसम अग्नि में घी डालने का कार्य कर रहा था। फिर क्या था काम जागृत होने लगा। शिष्य के मन में सुन्दरी के बारे में अनेक विचार आने लगे। काम ने उँगली पकड़कर अतिशीघ्र ही पौउँचा पकड़ लिया। शिष्य कामातुर हो गया। उसमें काम का आवेग आ गया। वह युवती से मिलने के लिए प्रयास करने लगा। उसने उस स्त्री से कहा, "दरवाजा खोलो, मुझे बहुत ठंड लग रही है"। स्त्री ने बड़े ही शाँत स्वर में कहा, "दरवाजा प्रातः होने के पश्चात् ही खुलेगा"। शिष्य का मन तो चलायमान हो रहा था। उसने तुरन्त कहा, "बाहर बहुत ठंड है। बहुत तेज वर्षा हो रही है। बिजली भी चमक रही है। बादल गरज रहे हैं और हवा बहुत ठंडी चल रही है। मुझे बहुत ठंड लग रही है। आप शीघ्र ही दरवाजा खोलिये नहीं तो मैं ठंड के कारण मर जाऊँगा"। स्त्री ने कहा, "दरवाजा नहीं खुलेगा"। शिष्य का विवेक तो बन्द हो गया था। उसे तो अब स्त्री से मिलने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं सूझ रहा था। उसने देखा कि स्त्री दरवाजा नहीं खोल रही है। थोड़ी देर बाद उसे एक दूसरा बहाना बनाया। वह झूठ ही चिल्लाने लगा,

"शेर आ रहा है, दरवाजा खोलो, नहीं तो वह मुझे खा जायेगा। शीघ्र ही दरवाजा खोलो"। वह दरवाजा पीटने लगा। अन्दर से आवाज आयी, "दरावाज प्रातः होने से पहले नहीं खुलेगा। आपका भी ऐसा ही आदेश है"। शिष्य ने सोच लिया कि दरवाजा नहीं खुलेगा, बहाने बनाने बेकार हैं। वह काम के वशीभूत था। उस पर काम का प्रबल आक्रमण हो गया था। वह कमरे की छत पर चढ़ गया और घास-फूँस की छत को उखाड़ कर कमरे में कूद गया लेकिन उसने देखा कि गुरुदेव आसन लगाये बैठे हैं। गुरूदेव को देखकर वह सन्न रह गया। स्त्री तो वहाँ थी नहीं। गुरूदेव ने धीरे से आखें खोली और अपनी लम्बी दाढ़ी हिलाते हुए धीरे से बोले, "शिष्य! क्या कर रहे हो? शिष्य का सारा नशा उतर गया। उसकी स्थिति ऐसी हो रही थी कि जैसे शरीर में खू ही न रह गया हो। उसने गुरूदेव के चरण पकड़ लिए और क्षमा माँगते हुए बोला, "गुरूदेव आप ही सत्य कहते थे। मेरा अज्ञान दूर हो गया है। अब मैं आपके बतलाये नियमों के अनुसार ही ब्रह्मचर्य का पालन करूँगा।

भ्रम निवारण

कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि विपरीत लिंग के साथ रहने से ब्रह्मचर्य का खण्डन नहीं होता, ये सब तो कहने की बातें हैं। ऐसे लोग महात्मा बुद्ध, महर्षि दयानन्द स्वामी विवेकानन्द आदि के उदाहरम भी देते हैं कि ये महापुरुष प्रचार, सुधार में इतने लगे रहे कि अधिकतर समय इनका समूह में ही व्यतीत हुआ और फिर भी ब्रह्मचारी ही रहे। यह तथ्य सत्य है। ऐसा हुआ है। इस गुत्थी को निम्नलिखित रुप से सुलझाया जा सकता है -

कबीर ने कहा है-

कबीरा तेरी झोंपड़ी गलकटियन के पास।
अपनी करनी वे भरें तू क्यं भया उदास॥

परन्तु एक दूसरा कथन इस प्रकार है-

काजर की कोटरी में कैसे ही सयानो जाय।काजर की एक रेख लागी है पे लागी है॥

पहली बात का भाव यह है कि चाहे जैसे भीलोगों के बीच रहा जाये कोई अन्तर नहीं पड़ता है। दूसरी का भाव यह है कि कैसा भी समझदार मनुष्य यदि बुरे लोगों के साथ रहेगा तो उस पर भी कुछ न कुछ प्रभाव उन लगों का अवश्य ही पड़ेगा। ये दोनों बातें विपरीत हैं। फिर भी दोनों सत्य हैं। वास्तव में ये बाते अलग-अलग मनुष्यों के लिए हैं। प्रथम बात सिद्ध के लिए कही गयी है और दूसरी बात साधक के लिए है। सिद्ध और साधक में अन्तर है। सिद्ध पर प्रभाव नहीं पड़ता है परन्तु साधक पर पड़ता है। साधक यदि सिद्ध के रास्ते पर चलेगातो गिर सकता है। ब्रह्मचर्य का अर्थ शारीरिक, वाचिक और बौद्धिक ब्रह्मचर्य की परिपक्वावस्था है। इस अवस्था में मनुष्य का स्वभाव ही ऐसा हो जाता है कि वह ब्रह्मचर्य की ही दिशा में चलता है। निम्न दो उदाहरणों से इस तथ्य की पुष्टि रो जाती है-एक बार महर्षि दयानन्द किसी नगर के पास एक बगीचे में ठहरे हुए थे। सायंकाल सन्ध्या के समय एक बहुत ही सुन्दर युवती वहाँ पर आयी और उसने देखा कि महाराज सन्ध्या कर रहे हैं। वह चुपचाप खड़ी हो गयी। उस समय वहाँ पर महर्षि के अतिरिक्त कोई दूसरा व्यक्ति भी नहीं था। कुछ समय के पश्चात् महर्षि ने सन्ध्या पूर्ण करके अपनी आँखें खोली तो देखते हैं कि वहाँ पर एक स्त्री खड़ी है। स्वामी जी महाराज ने बड़े धैर्य से पूछा, "कहो देवी किस लिए आयी हो"। य शब्द सुनकर वह स्त्री बहुत आश्चर्यजनक स्थिति में हो गयी क्योंकि उसे तो आज किसी ने पहली बार देवी कहकर पुकारा था। वह कुछ देर चुप रहकर बोली- "महाराज मैंने आपका बड़ा ाम सुना है। आप बड़े योगी, महापुरुष है, महर्षि हैं। मैं आप से कुछ मांगने आयी हूँ"। महर्षि ने कहा- "देवी मैं नहीं समझता हूँ कि मेरे पास आपको देने के लिएकुछ है, परन्तु यदि आपको कोई ऐसी वस्तु दिखलाई दे रही है तो कहो! मैं अवश्य दूंगा।" स्त्री ने कहा, "महाराज, मैं जो कुछ माँगने आयी हूँ वह आपके पास है"। महर्षि ने कहा, "देवी यदि आपको मेरे पास अपने योग्यकोई वस्तु दिखलाई दे रही है, तो आप ले लीजिए"। महिला ने कहा- "नहीं महाराज पहले आप मुझे वचन दीजिए कि आप मुझे दे देंगे"। महिर्षि ने कहा, "देवी इसमें वचन की क्या बात है? आपको जो वस्तु अपने योग्य दिखलाई दे रही है, आप स्वयं ले लीजिए"। स्त्री ने कहा, "'ही महर्षि, मैं आपको वचन देने के पश्चात् ही आपसे माँगूगी"। महर्षि ने कहा, "देवी, मेरा हाँ कहना ही आप वचन समझे। आप माँग लीजिए"। स्त्री ने अब यह मान लिया कि महर्षि अब अवश्य ही दे देंगे। उन्होंने वचन दे ही दिया है। उसने कहा, "महाराज, मुझे आप अपने ही जैसा एक पुत्र दे दीजिए"। महर्षि बहुत विलक्षण बुद्धि थे। उन्होंने तुरन्त उसके मनोभाव को समझ लिया। वें कहने लगे, "देवी देखो मेरे जैसे पुत्र के लिए पहले तो आपको उसे नौ महीने अपने गर्भ में रखना पड़ेगा। फिर पालन-पोषण तथा पढ़ाना-लिखाना पड़ेगा। इतना सब कुछ करने में तुम्हें बहुत परिश्रम करना पड़ेगा और इतना सब कुछ करने के पश्चात् भी हो सकता है कि वह मेरे जैसा न बन पाये। तब आप क्या करोगी? तुमने मुझसे मेरे जैसा पुत्र माँगा है। मैं स्वयं को तुम्हें देता हूँ। मैं आपका बेटा हूँ और आप मेरी माता हैं। आप नगर में जाकर ढिंढोरा पिटवा दीजिए कि दयानन्द मेरा वेटा है। मैं आज से आपको अपनी माँ के रुप में स्वीकार करता हूँ। जो कोई भी मुझसे पूछेगा "मैं कह दूँगा कि आप मेरी माँ हैं"। यह सुनकर वह स्त्री श्रद्धा से महर्षि को प्रणाम करके और शर्म से पानी-पानी हुई दुष्टों को कोसती हुई चली गयी। वास्तव में वह महिला एक वैश्या थी और विरोधियों ने उसे बहुत बड़ा लालच देकर महर्षि को बदनाम करने के लिए भेजा था परन्तु महर्षितो सिद्ध ब्रह्मचारी थे इसलिए उनकी योजना असफल ही रही। सिद्ध ब्रह्मचारी के मन में तो सदा ही उच्च विचार आया करते हैं वह किसी भी परिस्थिति में बहकता नहीं है।

दूसरा उदाहरण गौतम बुद्ध के दो शि,ढ्यों का है। एक बार उनके दो शिष्य कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्हें नदी पार करनी पड़ी। जब वे नदी के किनारे पहुँचे तो उन्होंने देखा कि वहाँ पर एक सुन्दर युवती भी नदी पार करने के लिए खड़ी है परन्तु डूबने के भय से जल में प्रवेश नहीं कर पा रही है। जव वे दोनों साधू नदी में प्रवेश करने लगे तो उस युवती ने प्रार्थना की, "आप मुझे भी पार करा दीजिए। मुझे वहुत ही आवश्यक कार्य के लिए जाना है। पानी में स्वयं प्रवेश करते हुए मुझे भय लग रहा है। आप कृपया मेरीं सहायता कीजिए"। गौतम बुद्ध के एक शिष्य तो कुछ झिजके परन्तु दूसरे ने दयावश उस सुन्दरी को अपने कन्धे पर बैठा लिया। इसके पश्चात् दोनों नदी पार हो गये। पार जाने के पश्चात् शिष्य ने उस युवती को अपने कंधे से उतार दिया और वह उनको धन्यवाद देती हुई अपने लक्ष्य की ओर चली गयी। दोनों शिष्य अपने मार्ग को चल दिये। अब यह शि,ढ्य जिसने अपने कन्धे पर युवती को नहीं बैठाया था, दूसरे से कहता है, "आपने उस सुन्दरी को अपने कन्धे पर बैठाया है। आपने गुरू की आज्ञा के बिना ऐसा किया है"। दूसरा शिष्य शाँत रहा। उसने फिर पूछा, "आपने ब्रह्मचर्य के विरूद्ध कार्य किया है। मैं चलकर गुरूजी से कहूँगा।" वास्तविकता यह थी कि जिसने

कन्धे पर बैठाकर पार कराया था उस पर कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ा था क्योंकि वह सिद्ध था परन्तु दूसरे पर देखने मात्र से प्रभाव पड़ गया था। उसमें कामुक विचार जागृत हो गये थे क्योंकि वह अभी साधक ही था। साधक और सिद्ध में यही अन्तर है।

दूसरा भ्रम यह है कि वर्तमान समय में ऐसा कहा जा रहा है कि विज्ञान ब्रह्मचर्य को नहीं मानता है। उसका कहना है कि ब्रह्मचर्य विषयक प्राचीन धारणायें गलत हैं। वें वैज्ञानिक कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं। आधुनिक चिकित्सा विज्ञान के अनुसार ब्रह्मचर्य का कोई महत्व नहीं है। उर्ध्वरेतस् नामक अध्याय में इस विषय पर भौतिक दृष्टिकोण से कुछ प्रकाश डाला गया है। प्राचीन प्रमाण कुछ इस प्रकार के मिलते हैं जिनसे ब्रह्मचर्य महत्वपूर्ण सिद्ध होता है। वर्त्तमान समय में नयी पीढ़ी ही ब्रह्मचर्य की खिल्ली उड़ा रही है, उसे नकार कर रही है इसका मुख्य कारण विज्ञान का ब्रह्मचर्य को नकारना है। यद्यपि वर्तमान वातावरण, खान-पान भी ब्रह्मचर्य के प्रायः अनुरूप नहीं है परन्तु धारणायें भी बदल रहीं हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जब हम ब्रह्मचर्य के बारे में विचार करते हैं तो एक प्रश्न यह उठता है कि क्या विज्ञान अपनी अन्तिम अवस्था पर पहुँच गया है ? विज्ञान दिन-प्रतिदिन नयी-नयी खोज कर रहा है। नये-नये सिद्धान्तों तथ्यों का पता लगा रहा है परन्तु ब्रह्माण्ड में तो अनन्त ज्ञान भरा हुआ है। अभी तो पता नहीं विज्ञान को कितनी कोज और करनी है। कण-कण में ज्ञान भरा हुआ है। सारी प्रकृति से ज्ञान सीखते रहो परन्तु कभी समाप्त हो जायेगा, ऐसा नहीं लगता है। फिर दूसरी बात यह है कि विज्ञान की धारणायें भी तो बदलती रहती हैं। उदाहरण के तौर पर पहले यह माना जाता था कि सूर्य पृथ्वी के चारों ओर घूमता है, परन्तु बाद में यह पता चला कि सूर्य नहीं बल्कि पृथ्वी सूर्य के चारों ओर घूमती है और अब यही माना जाता है। कुछ ऐसे नये रहस्यों का पता लगने से धारणाओं में परिवर्तन हो जाता है। तकनीके बदल जाती हैं। अतः हो सकता है कि विज्ञान ने जो कुछ अब तक ब्रह्मचर्य के विषय में जानकारियाँ प्राप्त की हों उनके अनुसार ब्रह्मचर्य का महत्व न हो परन्तु और आगे की खोजों से कुछ सूक्ष्म रहस्यों का पता लगे जिनसे ब्रह्मचर्य के महत्व का पता लगे। इतना तो अभी भी निश्चित् रूप से कहा जा सकता है कि यदि कम आयु में काम का उपयोग किया जाता है तो उससे शारीरिक और मानसिक हानियाँ होती हैं और इस बात को विज्ञान भी मानता है। इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि आजकल वैज्ञानिक स्तर से ही तो इस बात का प्रचार आकाशवाणी, दूरदर्शन आदि-आदि के माध्यम से किया जा रहा है कि अट्ठारह वर्ष की आयु से कम लड़की और इक्कीस वर्ष से कम आयु के लड़के का विवाह नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा करने से उनके शारीरिक और मानसिक विकास में बाधा पड़ती है। इसके लिए कानून भी बनाया गया है। इस उपरोक्त तथ्य से सिद्ध होता है कि विज्ञान ब्रह्मचर्य के महत्व को स्वीकार करता है अन्यथा विवाह के मामले में वैज्ञानिक दलीलें कैसे दी जाती ? यह बात सत्य है कि जीवन पर्यन्त ब्रह्मचारी रहना अत्यन्त कठिन है और पूर्णज्ञानी व योगी ही इसका पालन कर सकते हैं। ऐसे महापुरुष तो बिरले ही होते हैं। परन्तु आरम्भ की आयु में तो सभी को ब्रह्मचर्य का पालन करना बहुत आवश्यक है और सभी को इसका पालन करना चाहिए। विज्ञान के आधार पर और भी बहुत से ऐसे प्रमाण दिये जा सकते हैं जिनसे वैज्ञानिक स्तर पर ब्रह्मचर्य का महत्व सिद्ध होता है।

पाश्चात्य जगत् में एक बहुत बड़ा भ्रम यह फैला हुआ है कि ब्रह्मचर्य से कोई लाभ तो नहीं है उल्टे शारीरिक और मानसिक रोगों की वृद्धि होती है। इस भ्रम का निवारण, ब्रह्मचर्य के बारे में पूर्व और पाश्चात्य के विचार नामक अध्याय में किया है। यहाँ इतना कह देना पर्याप्त होगा कि पाश्चात्य भी भविष्य में ब्रह्मचर्य के महत्व को स्वीकार करेगा और वहाँ पर भी ब्रह्मचर्य पालन की प्रथा आरम्भ होगी, ऐसी आशा है।

चौथा भ्रम यह है कि कुछ लोगों का ऐसा कहना है कि ब्रह्मचर्य सम्भव ही नहीं है। यह तथ्य पूर्णतया निराधार है। ब्रह्मचर्य का पालन करने से ब्रह्मचारी रहना पूर्णतया सम्भव है। हाँ यदि जीवन में ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन तो किया न जाय, साधनों को साधा न जाय और ब्रह्मचारी रहा जाय तो सम्भव नहीं है। ब्रह्मचर्य एक साधना है और बिना साधना किये ब्रह्मचारी रहना सम्भव नहीं है। साधना करने पर ही सम्भव है।

ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में भारतीय और पाश्चात्य विचार

ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में पूर्व और पश्चिम के विचार पूर्णतया भिन्न-भिन्न ही नहीं बल्कि एक दूसरे के विपरीत हैं। भारत के जितने भी धर्म, सम्प्रदाय, मत-मतान्तर आदि हैं उन सब में ब्रह्मचर्य के महत्व को स्वीकार किया गया है। इस ऋषि-मुनियों के देश में जितने भी धार्मिक ग्रन्थ हैं, जैसे वेदों, उपनिषदों, गीता, रामायण, पुराणों आदि-आदि, सभी में ब्रह्मचर्य की महिमा गायी गई है। वेदों के अनुसार तो ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमपाघ्नत अर्थात् देवों ने ब्रह्मचर्य के बल पर मृत्यु को जीत लिया। कुल मिलाकर तथ्य यह है कि ब्रह्मचर्य के बल पर मृत्यु को जीत लिया। कुल मिलाकर तथ्य यह है कि ब्रह्मचर्य को बहुत बड़ा तप माना गया है। ब्रह्मचर्य का महान तेज होता है। ब्रह्मचारी ही श्रेष्ठ गुरु होता है। वह विद्यार्थियों को अधिक ज्ञानी बनाने में सक्षम होता है। उसके श्रीमुख से कहे गये वाक्यों का प्रभाव अपेक्षाकृत अधिक होता है। वह श्रेष्ठगुणों से सम्पन्न होता है। भारतीय परम्परा में सभी मनीषियों ने एक स्वर होकर मुक्त कण्ठ से ब्रह्मचर्य का गुणगान किया है। ब्रह्मचर्य को ईश्वर प्राप्ति में अत्यधिक सहायक बतलाया है। ब्रह्मचारी दीर्घायु प्राप्त करता है।

पाश्चात्य विचारकों के अनुसार सर्वप्रथम तो ब्रह्मचर्य सम्भव ही नहीं है। पाश्चात्य जगत् में यह एक आम धारणा है कि ब्रह्मचर्य का पालन करना असम्भव है। इन्द्रियों के दमन करने से उल्टे शारीरिक और मानसिक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। व्यक्ति रुग्ण होकर सामान्यावस्था से भी नीचे गिर जाता है। सच्चाई तो यह है कि पाश्चात्य जगत् में आम आदमी यह जानते ही नहीं कि ब्रह्मचर्य भी होता है। विचारकों ने इस विषय पर विचार किया और इसे मानने से इंकार कर दिया। पाश्चात्य जगत् के प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक सिंगमंड फायड़ ने इस विषय (काम) पर अत्यधिक चिन्त किया और काम का उपभोग करने के लिए ही कहा है। संक्षेप में हम यूँ कह सकते हैं कि सिगमंड़ फ्रायड़ का विचार ब्रह्मचर्य के विषय में भारतीय विचारधारा का विरोधी है। क्रियात्मक रुप से भी पाश्चात्य जगत् में काम का जिस प्रकार से उपभोग किया जा रहा है उससे वहाँ की विचारधारा का पता लग जाता है। लोग खाने-पीने की तरह ही स्वाभाविक रुप में काम का भोग कर रहे हैं। रहन-सहन, वेशभूषा आदि इस प्रकार है जिनसे कामवासना भड़कती है।

उपरोक्त तथ्यों से यह भली-भांति स्पष्ट हो जाता है कि ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में पूर्व और पश्चिम एकदूसरे के विरोधी हैं, परन्तु दोनों विचार पूर्णरुपेण सत्य हैं। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि उपरोक्त दोनों विचार पूर्णतया विपरीत होने पर भी पूर्ण सत्य हैं जबकि एक हीसत्य होना चाहिए। यह तो

ऐसी ही बात हुई कि जैसे एक व्यक्ति कहे कि सूर्य पूर्व में निकलता है और दूसरा कहे कि पश्चिम में निकलता है । इन दोनों विचारों में से केवल एक ही विचार सत्य हो सकता है । दोनों कभी नहीं हो सकते,परन्तु ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में पूर्व और पश्चिम दोनों के विचार विपरीत होने पर भी सत्य हैं । निम्न तथ्यों के द्वारा इस विरोध को भली-भांति समझा जा सकता है-

पहले पश्चिम के विचार को ही लेवें जो कि ब्रह्मचर्य के पालन करने से शारीरिक और मानसिक रोगों की उत्पत्ति मानता है । उनका कहना है कि इच्छाओं का दमन करने से तरह-तरह के रोग उत्पन्न होते हैं । वास्तव में यह बात सत्य है । ऐसा होता है । यदि कोई मनुष्य हठपूर्वक, बलपूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करने का प्रयास करेगा तो वह शारीरिक और मानसिक रोगों का शिकार अवश्य ही होगा । कारण यह है कि जब शारीरिक और मानसिक रुप से भीतर से कामपूर्ति की इच्छा होगी और बाहर से उसे दबाया जायेगा तो परिणामस्वरुप एक अन्तर्द्वन्द्व छिड़ जयेगा । यह आन्तरिक युद्ध दो विपरीत विचारों के बीच होगा । भीतर का विचार कामपूर्ति चाहेगा और बाहर का विचार उसे दबायेगा । विचारों का यह युद्ध एक ही व्यक्ति के अन्दर होगा । इस युद्ध में विजय चाहे कोई से विचार की हो जाये परन्तु हानि तो उसी व्यक्ति की ही होगी क्योंकि युद्ध उसी के भीतर हो रहा है, उसी के शरीर और मन रुपी भूमि पर हो रहा है और युद्ध से कुल मिलाकर तो हानि ही होती है । कारण यह है कि इस युद्ध में अन्ततोगत्वा दोनों ओर से उसी मनुष्य की शक्ति व्यय होगी । इसलिए वह शक्तिहीन होगा ही । मुख्य रुप से वह मानसिक रोगों से पीड़ित होगा ।

दूसरी बात यह होगी कि वह संश्य की स्थिति में होगा । कभी यह कामेच्छा की पूर्ति करना चाहेगा और कभी नहीं । कभी-कभी यह सोचेगा कि कामेच्छा की पूर्ति करना ठीक है और कभी सोचेगा कि नहीं । भारतीय मनीषियों के अनुसार ऐसी संश्ययुक्त अवस्था सर्व प्रकार से हानिकारक ही है । संशयात्मा विनश्यति ।

अतः अपने स्तर से पाश्चात्य चिन्तक जो कुछ कहते हैं वह सत्य है । कोई मनुष्य हठपर्वक काम को रोकेगा तो उसे रोग होंगे ही । यह भी सम्भव है कि उसके काम समर्थक विचार इतने प्रबल हो जाँय कि वह काम के आवेग के वशीभूत होकर बह जाय अर्थात् ब्रह्मचर्य भंग हो जाय । जैसा कि कभी-कभी इधर-उधर सुना भी जाता है । दूसरा विचार भारतीय है जो कि ब्रह्मचर्य को बहुत ही आवश्यक मानता है । सभी ने एक मत होकर ब्रह्मचर्य की प्रशंसा की है । शंकराचार्य जैसे दार्शनिक ने इन्द्रिय दमन को मोक्षमार्ग में साधन के रूप में माना है । मनु महाराज ने धर्म के दस लक्षण बतलाये हैं । इनमें से एक दमन है । जीवन के सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि और विकास का अधार ही ब्रह्मचर्य को माना गया है ।

उपरोक्त कथन के अनुसार अब देखना यह है कि ब्रह्मचर्य महत्वपूर्ण किस प्रकार है । वास्तवम में भारतीय विचारधारा के अनुसार ब्रह्मचर्य के तीन स्तर हैं जो निम्नलिखित हैं :- १) शारीरिक स्तर, २) वाचिक स्तर और ३) बौद्धिक स्तर । इन्हें हम क्रमशः शारीरिक ब्रह्मचर्य, वाचिक ब्रह्मचर्य और बौद्धिक ब्रह्मचर्य भी कह सकते हैं ।

शारीरिक ब्रह्मचर्य :- इसका अर्थ यह है कि शरीर से कोई ऐसी चेष्टा न करें जिससे कि काम का उद्भव होवे । काम के जागृत होने के लिए शरीर के स्तर पर जितनी भी चेष्टाएं हैं उन्हें न करना शारीरिक ब्रह्मचर्य है । न कोई ऐसा पदार्थ खाये जिससे उत्तेजना हो न ऐसे वस्त्र पहने आदि-आदि । भोजन, छादन, सोना, जागना, व्यायाम करना आदि सब नियमानुसार होने चाहिए ।

वाचिक ब्रह्मचर्य :- वाचिक ब्रह्मचर्य का भाव यह है कि वाणी से न तो अश्लील शब्दों को बोलें और न कामुक साहित्य को पढ़े और न ही सुने । यहाँ तक कि कामुक चर्चाओं में सम्मिलित न होंवे । क्योंकि यदि ऐसा किया जाता है तो कामुक प्रवृत्तियाँ जागेंगी और फिर अन्ततोगत्वा मनुष्य काम के वशीभूत हो जायेगा।

बौद्धिक ब्रह्मचर्य :- बौद्धिक ब्रह्मचर्य का अर्थ यह है कि बुद्धि में भी कामुक विचारों का न उठने देना बल्कि ऐसे विचारों को रखना है जो ब्रह्मचर्य रक्षा में सहायक होवें । बुद्धि में विचार बाह्य कारणों से आते हैं और भीतरी कारणों से भी उठते हैं । इनमें से जो विचार ब्रह्मचर्य रक्षा में सहायक होवें उन्हें ही ठहने देना और कामुक विचारों को न टिकने देना है । वास्तव में यदि देखा जाय तो ब्रह्मचर्य सफल ही तभी होता है जब बौद्धिक ब्रह्मचर्य होवे क्योंकि ऐसा होने से न तो वाणी ही अश्लील शब्दों को कहेगी और न शरीर से ही कोई ऐसी चेष्टा होगी जो कि ब्रह्मचर्य को खण्डित करे बल्कि बुद्धि में ब्रह्मचर्य रक्षा के विचार होने से वाणी और शरीर से ब्रह्मचर्य रक्षा का ही व्यवहार होगा । कारण यह है कि किसी भी कार्य का आरम्भ तो सर्वप्रथम विचार रुप में बुद्धि में ही होता है । उसके पश्चात् ही वह मन, वाणी और शरीर के स्तर पर होता है । बौद्धिक ब्रह्मचर्य होने से वाचिक और शारीरिक ब्रह्मचर्य स्वतः ही सिद्ध हो जाते हैं । जब बौद्धिक ब्रह्मचर्य होगा तो ब्रह्मचर्य के विचारों और कामुक विचारों में संघर्ष होने का प्रश्न ही नहीं उठता । जब संघर्ष ही नहीं होता तो शक्ति का ह्रास भी नहीं होगा और जब शक्ति का ह्रास नहीं होगा तो हानि कैसी ? अर्थात् हानि भी नहीं होगी । न कोई द्वन्द्व, न कोई टकराव और न दबाना (दमन) आदि-आदि । ऐसी स्थिति में मन उलझनों से रहित आकाश की तरह स्वच्छ होगा अर्थात् संश्य रहित होगा । संश्य रहित होने से और वीर्य की रक्षा होने से शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों का विकास होगा । अतः भारतीय विचार अपने स्थान पर पूर्ण रुपेण सत्य हैं । भारतवर्ष में हनुमान, भीष्म, शंकराचार्य, दयानन्द आदि अनेकों ऐसे ब्रह्मचारी हो चुके हैं जिनकी महानता सर्वविदित है और जिनके महान कार्यों से मानव जाति का बहुत बड़ा उपकार हुआ है । प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं है ।

उपरोक्त दोनों विचारधाराओं का अध्ययन करने के पश्चात् हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते है कि पाश्चात्य विचार केवल शारीरिक ब्रह्मचर्य की बात कहता है । वाचिक और बौद्धिक ब्रह्मचर्य की चर्चा नहीं करता जिनके बिना ब्रह्मचर्य सम्भव ही नहीं है । यदि प्रयास भी किया जायेगा तो वह असफल रहेगा । शारीरिक और मानसिक रोग भी होंगे । भारतीय विचारधारा में बौद्धिक ब्रह्मचर्य होने से यह सफल भीहोगा । न रोग होंगे बल्कि शक्ति और उत्साह की वृद्धि होगी । अतः भारतीय विचार के अनुसार ब्रह्मचर्य में भीतर से कामुक विचार उठेंगे ही नहीं और पाश्चात्य विचार के अनुसार कामुक विचारों को दबाना पड़ेगा ।

दूसरी बात यह है कि भारतीय विचारधारा के अनुसार ब्रह्मचर्य के नियमों का पालन करना ब्रह्मचर्य रक्षा के लिए अति आवश्यक है । आहार, व्यवहार, दिनचर्या, जीवनचर्या आदि सभी बातों का पालन करना परम आवश्यक है । योगाभ्यास, प्रभुभक्ति इत्यादि करना ब्रह्मचर्य में अत्यधिक सहायक है । पाश्चात्य विचारकों ने जब ब्रह्मचर्य के बारे में सोचा तो उन्होंने उपरोक्त नियमों के पालन के बिना ही ब्रह्मचर्य की सफलता और असफलता के निर्णय प्राप्त किये जो कि दुःखदायी ही होने थे ।

इस प्रकार दोनों प्रकार की विचारधाराएँ अपनी-अपनी जगह ठीक हैं । ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में भारतीय मनीषि जिस ऊँचाई तक गये हैं पाश्चात्य विचारकों ने उस स्तर तक विचार नहीं किया है ।

अद्भुत चमत्कार अर्थात् मोजज़ों पर विचार

-श्रीकृष्णानन्द जी

ईश्वरीय नियम (कानून क़ुदरत) की न जानकर बड़े बड़े विद्वान् भी भारी भूल कर बैठते हैं। उदाहरणार्थ मोजज़ों *१ (चमत्कार)पर ध्यान दीजिये । किसी व्यक्ति को मोजज़ा (अलौकि शक्ति या चमत्कार) मिलना ईश्वरीय नियम के विपरीति है । ईश्वर कभी किसी को मोजजा नहीं देता । परन्तु पौराणिक, बौद्ध, जैन, ईसाई, यहूदी और मुसलमान आदि आदि सब मतों के विद्वान् भी मत या ग्रन्थ के मोजज़ो पर विश्वास रखते और अपने से भिन्न किसी मत के किसी चमत्कार को सत्य नहीं जानते ।

इस बात पर ध्यान दीजिए कि कोई मतवादी अपने से भिन्न मत के मोजजों को सत्य क्यों नहीं मानता ? सब सम्प्रदाय के चमत्कारों में अत्यन्त अलौकिकता और सृष्टिक्रम विरुद्धता है । इसका कारण यह कभी नहीं हो सकता कि किसी एक मत का चमत्कार सत्य हो और शेष सब मतों के मोजज़ों असत्य हों । यदि किसी मत का मोजज़ा सत्य होता तो उस मत के लोग अब भी मोजसे दिखला सकते, क्योंकि उस मत के लोग (विद्वात्, और संत) भी मौजूद है और ईश्वर भी मौजूद है । यदि ईश्वर ने पहले उन आश्चर्य यह है कि मोजज़ों के द्वारा भी कोई सम्प्रदाय सारे संसार में न फैल सका । यदि हमारे पौराणिक भाइयों के देवी-देवता सचमुच अद्भुत अलौकिक शक्तिवाले हैं तो वे संसार में प्रकट होकर पौराणिक धर्म का प्रचारक्यों नहीं करते जब ये देवता पर्वताकार राक्षसों को मार डालने में समर्थ हैं और क्षण भर में लोप ही जाने तथा पर्वताकार शरीर धारण करने की सामर्थ्य रखते हैं तो कौन सी रुकावट है जो वे प्रकट होकरपौराणिक धर्म का प्रचार नहीं करते या पौराणिक धर्म के विरोधियों को दंड नहीं देते ? वे तो अमर हैं, उन्हें कोई मार सकता नहीं वे अद्भुत शक्ति-शाली हैं तो मनुष्य उन्हें जरा भी हानि नहीं पहुँचा सकते, उन्हें किस बात का डर है जो वे संसार में आते ? यह कहना कि "कलियुग के कारण" एक बहाना *२ मात्र है । जब किसी बात का ठीक उत्तर नहीं दे सकते तो एक बहाना बना लेते हैं । यदि तीर्थंकर अमर व अद्भुत शक्तिशाली होते और महात्मा बुद्ध ईश्वर होते तो वे बार-बार संसार में प्रकट होकर धर्म की ध्वजा फहराते ।

यदि ईसामसीह भोजज़ों से युक्त होते तो वह अब भी संसार में अवश्य आते और मोजज़ों के द्वारा ईसाई मत को शीघ्र सारे संसार में फैला देते । उन्हें यहाँ आने में कोई रुकावट न हो सकती ।क्योंकि वह ईश्वर के इकलौते बेटे, ईश्वर उनके परम सहायक और दोनों हीसंसार में धर्म प्रचार करना चाहते हैं । ऐसी दशा में ईश्वर अपने पुत्र को दुबारा तिबारा क्यों नहीं भेजता ? क्या ईश्वर या उसका पुत्र अब संसार में धर्म का प्रचार करना नहीं चाहते ? इस बात का ठीक उत्तर न देकर ईसाइयों ने यह बहाना ढूँढ रक्खा है कि "वह अब बीच में न आवेगा कायामत के ही दिन प्रगट होकर निर्णय करेगा ।" यदि हजरत मोहम्मद मोजज़ों से युक्त होते तो अब भी संसार में आते और मोजज़ों के द्वारा सारे संसार को मुस्लिम बना डालते । क्योंकि मोजज़ों के कारण कोई आदमी रत्ती भर भी उन्हें हानि न पहुँचा सकता । जिसका मददगार खास खुदा है और जो अद्भुत शक्ति (मोजज़ों) से 'युक्त है । क्या मजाल कि कोई आदमी उसे कुछ भी हानि पहुँचा सके लेकिन यह मतवादियों का मायाजाल है उन्होंने ईश्वर को अपने सम्प्रदाय का सहायक सिद्ध करने के लिये अपने ग्रन्थों में भोजज़ों का उल्लेख कर दिया । अगर यह कहा जाय कि अब ईसा को या मुहम्मद को खुदा दुनिया में नहीं भेजता तो प्रश्न उठता है कि इस दोनों को जिस कार्य के लिए पहले भेजा था उसी कार्य के लिए अब क्यो नहीं भेजता ? वह तो कादिर मुतलक है, उसे कौन सी रुकावट है ? क्या खुदा अब ईसाई मजहब को दुनिया में फैलाना नहीं चाहता ? आखिरईश्वर ने अपने पुत्र को संसार में किस लिये भेजा था ? और अचरज है हजरत ईसा चुपचाप बैठे रहने पर, वह अपने पिता से विनती नहीं करते कि "ऐ पिता ! तू मुझे संसार के कल्याणार्थ फिर भेज, जिससे में पुनः सारे संसार को अपना मतानुयायी बना डालूँ ।" इसी प्रकार यदि खुदा को मजहब

---

* १ (जैसे हनुमान जी का सूर्य की निगल जाना, उनकी दुम बढ़ना, देवताओं का पर्वताकार शरीर धारण कर लेना, अगस्त्य मुनि का समुद्र को पी लेना, श्रीकृष्ण के मुख में तीनों लोक देखना या उँगली पर पर्वत उठा लेना या द्रौपदी का चीर लाखों गज़ लम्बा हो जाना, रामचन्द्र के जन्म के समय ७२० घंटे का एक दिन होना, राम का बन से वापस आकर हजारों रूप धारण करके लाखों मनुष्यों से अलग अलग आध घंटे में मिलना, ईसा का कुमारी कन्या से पैदा होना और इच्छा-मात्र से मुर्दा को जिन्दा कर देना या एक रोटी व एक मछली से हजारों मनुष्यों का पेट भर देना, मुहम्मद साहब का ऊँगली के इशारे से चन्द्रमा के टुकड़े कर देना या सेर भर छुहारे से सैकड़ों मनुष्यों का पेट भर देना, मुहम्मद साहब को देखकर दीवार व वृक्षों का कल्मा पढ़ना । तीर्थंकर का पैर के अंगूठे से पृथ्वी को हिला देना, हजरत मूसा के डंडे का अजगर बन जाना इत्यादि हजारों मीजज जैनियों पौराणिकों ईसाइयों और मुसलमानों में प्रसिद्ध है । इनके अतिरिक्त हल मत के संतों व योगियों के ऐसे चमत्कार भी सर्वसाधारण में प्रसिद्ध हैं जैसे पानी को तुरन्त घी या दूध बना देना, मुट्टी में से हजारों रुपया या अशर्फी पैदा कर देना, गायब होकर क्षण भर में हजारों कोस की दूरी पर चले जाना, बांझ को पुत्र दे देना या लड़की की इच्छामात्र से लड़का बना देना इत्यादि ।)

* २ *(हमारे पौराणिक भाई वर्तमान समय में ईश्वरावतार न होने का कारण भी कलियुग के मथ्थे मढ़ते हैं । वे कहते हैं कि कलियुग के अन्त में अवतार होगा । मैं कहता हूँ कि ईश्वर का अवतार जब धर्म प्रचारार्थ ही होता है तो जब सब लोग नरक में ही चले जायँगे तब कलियुक के अन्त में अवतार ही लेकर क्या करेंगे एक का वर्षा जब कृषि सुखाने एक बात और है । पौराणिक मत से सत्ययुग में २० भाग धर्म था, श्रेता में १५ भाग धर्म और ५ भाग अधर्म था और प्रत्येक युग में ६ या ७ बार अवतार का होना लिखा है तो इस हिसाब से कालियुग में (जब कि ५ भाग धर्म और १५ भाग अधर्म है) हो कम से कम १४ या २१ मर्तबे अवतार होना चाहिये । परंतु पुराणों में केवल दो अवतार (बुद्ध और कल्कि) का होना लिखा है । यह कहां का न्याय है ? अस्तु यह दृढ़ निश्चय है कि ईश्वर कभी अवतार नहीं लेता । हजारे भोले भाले भाइयों ने किलयुग का बहाना ढूँढ रक्खा है ।)

इस्लाम फैलाने की जरा भी ख्वाहिश होती तो वह मुहम्मद साहब को दुबारा-तिबारा संसार में अवश्य भेजता । क्योंकि कादिर-मुतलक खुदा को कोई रुकावट न हो सकती । और आश्चर्य है कि हजरत मुहम्मद भी चुपचाप आसमान पर बैठे देख रहे हैं कि सैकड़ों करोड़ आदमी मजहब इस्लाम के खिलाफ़ हैं तो भी खुदा से ऐसी प्रार्थना नहीं करते कि ''ऐ खुदा ! तू मुझे फिर दुनिया में भेज ताकि में सब काफिरों को पक्का मुसलमान बना डालूँ ।'' ''मुद्दई सुस्त गवाह चुस्त'' वाला मसला है, खुदा और हजरत मुहम्मद दोनों तो चुपचाप बैठे हैं, उन्हें अपना मजहब फैलाने की चिन्ता नहीं और हमारे मुसलमान भाई समझ बैठे है कि खुदा मजहब इस्लाम फैलाना चाहता है । वे नहीं सोंचते कि अगर खुदा को मजहब इस्लाम फैलाना अभीष्ट होता तो वर्त्तमान समय में भी वह हजरत मुहम्मद को जरू भेजता । क़ादिर-मुतलक़ को कोई रुकावट नहीं हो सकती ।

हमारे पौराणिक व मुसलमान दोनों भाई सर्वशक्तिमान (कादिर मुतलक) का यही अर्थ करते है कि ईश्वर सब कुछ कर सकता है । परंतु यह अर्थ ठीक नहीं है । असल में सर्वशक्तिमान का अर्थ यह है कि संसार के समस्त पदार्थों को रचने की शक्तिवाला । ईश्वर के समस्त पदार्थों को रचने की शक्तिवाला । ईश्वर परमात्मा इसीलिये सर्वशक्तिमान् कहलाता है कि वह पृथ्वी, चन्द्रमा, सूर्य, तारे आदि समस्त पदार्थों की रचने की शक्ति रखता है । सर्वशक्तिमान् का अर्थ असम्भव को सम्भव बना देने का नहीं है । जो लोग इसका अर्थ ''सब कुछ कर सकना असम्भव को सम्भव बना देना ।'' करते हैं वे वड़े भ्रम में हैं । अच्छा यदि हम मान लें कि वह सब कुछ कर सकता है तो बतलाइये कि वह इस समय अवतार क्यों नहीं लेता ? ईसा या मुहम्मद को क्यों नहीं भेजता ? अगर वह इस समय अवतार नहीं ले सकता या ईसा व मुहम्मद को नहीं भेज सकता तो आपके अर्त से वह सर्वशक्तिमान् नहीं ठहरता । अगर आप कहें कि ''उसकी मर्जी'' तो प्रश्न होता है कि वहवैसी मर्जी क्यों नहीं करता ? जिस हेतु से अवतार लिया, ईसा या मुहम्मद को भेजा उसी हेतु से वैसी ही इच्छा अब क्यों नहीं करता ? आपके अर्थ से यदि यह सर्वशक्तिमान् है तो लोटा में से घोड़ा, चावल में से बिल्ली और गगरी में से शेर क्यों नहीं पैदा कर देता ? चिड़िया के पेट से कुत्ता और कुतिया के पेट से हाथी को क्यों नहीं उत्पन्न करता ? चूंकि इन सबकार्यों को वह नहीं कर सकता इसलिये आपके हिसाब से वह सर्वशक्तिमान् नहीं । ''उसकी मर्जी'' कहना एक बहाना मात्र है । सिद्धान्त यह है कि ईश्वर अपने नियमानुसार कार्य करता है, उसके नियम अटल हैं । अवतार लेने या दूत आदि भेजने का उसका नियम नहीं है । वह अपने नियमों को नहीं तोड़ता । यदि वह अपने नियमों को बदलता रहता तो आपको किसी बात का निश्चय न रहता और न आप कोई कार्य धैर्य व सन्तोष सेकर सकते । उदाहरणार्थ आप रोटी न पकाते क्योंकि शायद वह रोटियाँ उड़ा जीतीं । आप रुपयों को सन्दूक के भीतर ब रखते क्योंकि शायद वह सबरुपये आलू बन जाते । आप न्न खरीद कर न रख सकते क्योंकि सम्भव है वह सब अन्न बालू बन जाता । आप चाँदी सोना खरीद कर निश्चिन्तता से छिपा न रखते क्योंकि सम्भव है वह धातु मिट्टी बन जाती । यदि ईश्वर एक घंटे के लिए भी अपना नियम बदल दे तो न जाने क्या हो जाय ! ईश्वर अपना नियम नहीं बदलता इसीलिये हम सब मनुष्य धैर्य सन्तोष और निश्चय-पूर्वक कार्य कर रहे हैं । सर्वशक्तिमान् का ठीक अर्थ आपने नहीं समझा है, कृपया सत्यार्थ प्रकाश में देखिये ।

अगर हजरत मुहम्मद दुनिया में आकर कुरान के अनुसार मोजज़ो दिखलाना शुरू कर दें तो उनके मोजज़ो हरगिज नहीं मिला । मुसलमान विद्वानों ने भी इस बात का अनुभव कर लिया था कि अब विद्या व ज्ञान का प्रकाश फैल रहा है । द्बव लोग ऐसी बात पर कि खुदा ने मजहब फैलाने के लिये पैगम्बर को भेजा था । विश्वास न करेंगे उन्होंने झट एक सिद्धान्त गढ़ लिया कि ''मुहम्मद साहब आखिरी रसूल थे । अब कोई रसूल न आवेगा'' इस पर प्रश्न उठता है कि क्यों न आयेगा ? क्या दुनिया भर में मजहब इस्लाम फैल गया ? क्या दुनिया में अव काफिर नहीं रहे ? मैं कहता हूँ जब तक दुनिया में करोड़ों काफ़िर मौजूद है तब तक पैगम्बर का दुनिया में रहना जरूरी है ।चूंकि इस्लाम मत के विरोधियों को संख्या १४० करोड़ होने पर भी खुदा पैगम्बर को नहीं भेज रहा है इससे सावित है कि खुदा मजहब इस्लाम को फैलाना नहीं हता । वैदिक धर्म पर यह आक्षेप नहीं हो सकता क्योंकि वैदिक धर्म मोजज़ा वाले दूत, पूत, अवतारके सिद्धान्त को नहीं मानता । कविवर नाथूराम शंकर ने बहुत ठीक कहा हैं-

मान सच्चिदानन्द के दूध पूत अवतार ।
भूले महिमा ब्रह्म की अबुध अविद्या धार ।।

अस्तु, मेरा निश्चय है कि आरम्भ में किसी एक मजहब वाले ने अपने ग्रन्थों में मोजज़ों का वर्णन लिख दिया होगा, उसे दूसरे मजहब वाले ने और दूसरे को देखकर तीसरे मजहब वाले ने सोचा होगा कि यदि लोग हमारे मजहब में चमत्कारों का वर्णन न पावेंगे तो लोग हमारे मजहब को तुच्छ व निर्बल समझेंगे । ऐसा विचार कर उन्होंने अपने अपने ग्रन्थों में भिन्न-भिन्न प्रकार के अद्भुत कर्मों (मोजज़ों) का उल्लेखकर दिया होगा उनकी आशा भी पूर्ण हुई, क्योंकि वह समय उनके अनुकूल था, पर अब अन्धविश्वास का समय नहीं रहा । अब ऐसी बातों पर कोई विशिक्षित विश्वास नहीं करता । ऐतिहासिक विद्वान इन मोजज़ों का प्रमाण नहीं मानते । विज्ञान (साइन्स) से भी मोजज़ों का मिथ्यात्व सिद्ध है । मनः शक्ति और मेस्मरेजम के द्वारा जो अद्भुत कार्य देखे जाते हैं उनसे भी मजहबी मोजज़ों (जैसे सूर्य को निगल जाना, समुद्र पी लेना, उँगली पर पर्वत उठा लेना, चन्द्रमा को उँगली के इशारे से काट देना, इच्छा मात्र से कोढ़ी को चंगा कर देना व मुर्दों को जिन्दा कर देना, आदिः को सिद्धि नहीं होती । तर्क और दूरदर्शिता से विचार करने से पता लगता है कि मजहब फैलाने के लिए ईश्वर कभी किसी व्यक्ति को मोजज़ा नहीं देता । वह संसार को रचता, धारणकरता और अपने न्याय-नियम के अनुसार सब जीवों को शुभाशुभ कर्मों का फल देता है । ईश्वर को कुछ भी आवश्यकता नहीं कि वह लोगों को मोजज़ा दे । यदि वह पहले लोगों को मोजज़ा देता तो अब भी अवश्य देता । लेकिन मोजज़ा देने का उसका नियम ही नहीं है । असल में यह मजहब वालों की कारस्तानी हैं जो अपने मजहब को खुदा का मजहब सिद्ध करने तथा अपने मजहब की प्रतिष्ठा व प्रसिद्धि के लिये मोजज़ों की मिथ्या कल्पना कर ली है ।

पुराणों के देवता हमारे प्राचीन पूर्वज आर्य थे । वे धर्मात्मा, शूरवीर, विद्वान्, ईश्वर भक्त, परोपकारी और कलाकौशल के प्रेमी ते । दैत्य, दानव और राक्षस मनुष्य ही थे । लेकिन वह अन्यायी, और अत्याचारी थे । आर्यों और अनार्यों की लड़ाई का नाम देवासुर संग्राम है । लिखने का ढंग निराला है । पुराणों में जो देवासुर संग्राम का वर्णन है वह वास्तव में आर्यों और उनके शत्रुओं का पारस्परिक घोर युद्ध है । मेरा मुख्य अभिप्राय यह है कि वे सब मनुष्य ही थे । यक्ष, नाग, किन्नर, गन्धर्व यह मनुष्यों की एक एक जाति का नाम था । ऋक्ष

और वानर भी मनुष्य थे, वे बन व पर्वत में रहते थे उनकी जाति का नाम-मात्र ऋक्ष और वानर था। हनुमान, सुग्रीव, वालि को दमवाला सम्झना बड़ा भ्रम है । नाग जाति के मनुष्यों को सांप समझना अन्धविश्वास है । हनुमान के पिता का नाम मारुत था । उन्हें हवा का लड़का मानना बड़ी भूल है। भीष्मपितामह की माता का नाम गङ्गा था । उन्हें गङ्गा नदी का पुत्र मानना मूर्खता है। शिव के वालों से गङ्गा व वीरभद्र की उत्पत्ति मानना भ्रम है। पार्वती को पर्वत की कन्या मानना भ्रम है । असल बात यह है कि वह हिमालय पर्वत के राजा की कन्या थी। रावण के दस सिर नहीं थे हाँ उसके दस पुरुषों के बराबर दिमाग होगा इसीलिए उसे दशानन लिखा है । दुर्गा को अष्टभुजावाली मानना भ्रम है। दुर्गा नाम की कोई वीरांगना रही होगी जिन्होंने उपद्रवी शुंभ निशुंभ को मार डाला होगा। पुराणा के लेखकों ने असर घटनाओं में नमक मिर्च मिला दिया है-चमत्कारों (मोजज़ों) का वर्णन लिख दिया है लेकिन वे सब भजज़े मिथ्या और कल्पित हैं। पुराणों में जिस प्रकार के सब मोजज़े मिथ्या और कल्पितहैं । पुराणों में जिस प्रकार के कल्पवृक्ष, कामधेनु और अमृत का वर्णन है वह कल्पना-मात्र है। खेद है कि हमारे पौराणिक भाई पुराणों को पढ़ते सुनते समय वैशेषिक दर्शन के इन दो सूत्रों को एक दम भूल जाते हैं

१) **कारणगुणपूर्वको कार्यगुणो दुष्टः ।**

२) **कारणाभावत्कार्याभावः ।।**

किसी वृक्ष या गायसे हजारों तरह की वस्तुयँ उत्पन्न होना उक्त दो सूत्रों अथवा साइन्स से असिद्ध है इसी तरह फल या बाल से मनुष्य की उत्पत्ति मानना और शिव के वीर्य से सोना चाँदी आदि धातुओं की उत्पत्ति मानना भ्रम है। ऐसा अमृत होना असम्भव है जिसे पीकर कोई शरीर से अमर हो जाय। हाँ यदि किसी विशेष औषधि को (जो स्वास्थ्य, बल, वीर्य व क्रान्ति की बढ़ावे) अमृत मान लिया जाय तो कोई हज नहीं। दूध, दही और शहद का समुद्र होना गप्प है ।

जैनियों के तीर्थंकर तरह मनुष्य थे, दस दस या पचास पचास गज के लम्वे नहीं थे। हममें और उनमें इतना ही अन्तर है कि वे अहिंसक, त्यागी, योगाभ्यासी और तपस्वी थे । ईसामसीह हमारी तरह मनुष्य थे, कुँवारी कन्या से पैदा नहीं हुये थे और न उन्हें मोजज़ा मिला था, उनको कुँआरी कन्या से उत्पन्न ईश्वर का *३ पुत्र मान लेना इतना ही मिथ्या व भ्रमपूर्ण है जितना कि कर्ण को कुमारी कुन्ती से उत्पन्न, इस चमकते और दहकते हुये पर्चण्ड सूर्य कापुत्र मान लेना और हनुमान को पृथ्वी की चारों ओर फैली हुई वायु का पुत्र मान लेना। हनुमान कर्ण, और ईसा तीनों ही मनुष्य थे और मनुष्य के पुत्र थे। इसमें कोई संदेह नहीं कि ईसामसीह एक महात्मा थे, उनके हृदय में दया, प्रेम, परोपकार, उदारता आदि उच्च भाव भरे थे । वह बाल ब्रह्मचारी और ईश्वर के भक्त थे, परन्तु उनके शिष्यों ने उन्हें ईश्वर का पुत्र मानकर उनके जीवन चरित्र में कल्पित मोजज़ों को बढ़ा दिया। हजरत मुहम्मद हमारी तरह मनुष्य थे। वह ईश्वर के दूत नहीं थे और न मोजज़ों से युक्त थे। वह देश के अनुसार एक सुधारक, दृढ़ और शूरवीर पुरुष थे । उन्होंने अपनी बुद्धिमत्ता और शूरता से अरबवालों का सुधार व संगठन कर दिया । परन्तु इस्लाम मत को सारे संसार के लिए मानना भारी भ्रम है ।

निदान जिन्हें लोग देवता, अवतार, पैगम्बर, तीर्थंकर और ईश्वर का पुत्र मानते हैं वे सब मनुष्य थे । मोजज़ों (अद्भुत चमत्कार) की बातें बनावटी और मनगढ़न्त है। कोई मतवादी यह नहीं कहता कि सब मतों के सब मौजज़ो सत्य है । परन्तु किसी मतवादी का अपने मजहब के मोजज़ों को सत्य मानना और दूसरे मत के माजज़ों को असत्य मानना दुराग्रह और अन्याय है किसी एक मत के मोजज़ो की सत्य मानने में अकाट्य युक्ति और प्रबल प्रमाण क्या है ? हमें कोई सज्जन बतलावें कि इसका क्या सबूत है कि उसी एक मत के मोजज़ो सत्य हैं और शेष सब मतों के मोजज़ो असत्य हैं । जब तक लोगऐसे मोजज़ों से विश्वास न हटा लेंगे तब तक लोग सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकते ।

एक अध्यापक ने महात्मा गाँधी को पत्र लिखा था कि ऋषि लोग योग व अहिंसा का अभ्यास करके असंभव को सम्भव कर दिखलाते थे इस पर आपका विश्वास है या नहीं उसका उत्तर महात्मा गाँधी ने इस प्रकार लिखा था-

"योग और अहिंसा के अभ्यास से जैसे कार्यों की सिद्धि होना अध्यापक ने बताया है मैं उसे नहीं मानता । पहुँचा हुआ योगी और अहिंसा व्रती भी प्रकृति के अपरिवर्त्तनीय और अटल नियमों को नहीं बदल सकता । प्रकृति के नियमों के बन्धन से वे भी ऐसे ही बंधे होते हैं जैसे हम सब । स्वयं परमात्मा ने भी अपने नियमों की बदलने का अधिकार अपने हाथ में नहीं रखा है और ऐसा परिवर्त्तन करने की उसे कोई आवश्यकता नहीं होती। वह सर्वशक्तिमान् और सर्वज्ञ है । उसे बिना किसी प्रयास के प्रत्येक क्षण भूत, वर्त्तमान और भविष्य का ज्ञान होता है । इसलिये उसे किसी बात में पुनः विचारकरने, बदलने या संशोधन करने की आवश्यकता नहीं है । हिंसात्यागी और योगी निसन्देह कई शक्तियाँ बढ़ा सकते हैं, किन्तु वे सब ईश्वर के प्राकृतिक नियम के भीतर होती हैं ।..."

तपस्वी गाँधी के उक्त गम्भीर विचार पर और मनस्वी लाजपतराय के निम्नलिखित अमृत-वचन पर खूबध्यान दीजिये ।

"औरों के सुख व अपना सुखतथा औरों के दुख में अपना दुःख जानकर अपने जीव को परमात्मा की सृष्टि की सेवा में अर्पण करनेवाले दृढ़ता और पुरुषार्थ से अपने उद्देश्य पर स्थिर रहने वाले महापुरुषों का होना किसी भूमि विशेष अथवा जाति विशेष में नियत नहीं है किन्तु हर एक जाति में समय समय पर वे उत्पन्न होते रहते हैं । ऐसे महापुरुषों की असाधारण शिक्षा, अशाधारण शक्ति, असाधारण साहस, अशाधारण ज्ञान, अशाधारण परोपकार और अकारणिक प्रेम को देखकर लोग उन्हें रसूल, पैगम्बर, बली-अल्लाह, अवतार, देवता, महात्मा आदि भिन्न-भिन्न नामों से प्रेमपूर्वक स्मरण करते हैं और उनकी शिक्षा का अन्तर्गामी होना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं और उनके नाम से स्मारक चिन्ह स्थापित करते हैं । उनके उपदेशों को प्रमाण मानकर उनका पालन करना परम कर्त्तव्य समझते हैं ।"

ईश्वर का बड़प्पन चमत्कारों या नियम विरुद्ध असाधारण बातों के दिखाने में नहीं है । संब से बड़ा चमत्कार यही है कि ईश्वर के नियम अटल हैं जिनमें देश काल में की अपो से कोई परिवर्तन नहीं होता। समस्त सृष्टि ही ईश्वर की शक्ति का एक जाज्वल्पमान चमत्कार है । अन्य चमत्कारों की आवश्यकता नहीं । और न उनका मानना उचित ही है ।

-श्रीकृष्णानन्द जी

*३ (यदि ईसा ने कहा कि "मैं ईश्वर का पुत्र हूँ" तो मेरे विचार से उनका सह आशय रहा होगा कि "जो मेरे समान परोपकारी व सुधारक महात्मा हैं वे ईश्वर के पुत्र समान है, उनका सम्मान करना चाहिये, इनका कभी अनादर न करना चाहिये ।" परन्तु ईसा के मुख्य तात्पर्य को न समझ कर उनके शिष्यों ने उन्हीं को ईश्वर का इकलौता बेटा मान लिया ।)

धर्म से होने वाली कल्पित हानियाँ

आजकल बहत दिनों से लोगों की यह धारणा हो रही है कि धर्म एक बड़ी हानिकारक वस्तु है, इनको जितनी जल्दी हो सके संसार से मिटा देना चाहिये । पश्चिमी देशों के विचारशील लोगों ने धर्म के विरुद्ध बड़े-बड़े आन्दोलन किये है और भारतवर्ष के नवयुवक भी उन्हीं के पैरों के चिन्हों पर चलना अपना गौरव समझते हैं ।

यदि धर्म से मनुष्य जाति की हानि होती है तो इसे अवश्य हो सर्वथा निकाल देना चाहिये परन्तु यदि धर्म लाभदायक वस्तु है तो उसका अनादरकरना मनुष्य के लिये हितकर न हो सकेगा ।

प्राचीन काल में तो धर्म सबसे आवश्यक वस्तु समझा जाता था । लोगों का कहना था कि जहाँ धर्म गया वहाँ सर्वस्व गया । इसलिये यदि कोई किसी को अधर्मी कह देता था तो शाली समझी जाती थी । लोग समझते थे कि धर्म से सुख और अधर्म से दुःख होता है । इसलिये लोग धर्म की तलाश में मारे-आरे फिरते थे । जो उनको धर्म का उपदेश देता था उसके कृतज्ञ होते थे । उस समय उनका यहीं प्रश्न होता था कि धर्म क्या है ?

परन्तु आजकल ऐसे प्रश्न करने वाले महामूर्ख या धूर्त और पाखन्डी समझे जाते हैं । वहुत से पढ़े लिखे लोग धर्म के नाम से ऐसे भागते हैं मानों यह कोई बड़ी भयानक वस्तु है । कुछ लोग कहा करते है कि धर्म एक नशा है जिसने मनुष्य जाति को उन्मत बना रक्खा है और जिसके कारण हमारा सब काम रुका पड़ा है ।

अब जरा आक्षेपों को सुनिये :-

पहला आक्षेप

धर्म और ईश्वर के कारण लड़ाइयां होती हैं । देखतें नहीं कि मुप नमान नित्व आपस में लड़ते और सिर फोड़ते हैं । यदि यह लोग हिन्दुधर्म और मुसलमान धर्म को छोड़ दें तो भाई भाई के समान बर्त्ते, इनमें सब भेद भाव मिट जाय । यरोप में पहले काथोलिक और प्रोटे डेन्टों में कितने घोर युद्ध हुये । एक मत वाल दूसरे मत वालों पर कितना अत्याचार करते है । काथोलिकों ने सैकड़ों प्रेटस्टेन्टों को जीवित जला दिया । केवल इस लिये कि वे इनके धर्म के पानने वाले न थे । ईसाइयों और मुसलमानों की क्रास लड़ाई बहुत दिनों जारी रहीं । ईसाई लोग यहूद्यों को बसने नहीं देते क्योंकि यह नके धर्म के विरुद्ध है । मनुष्य मनुष्य सव ब बिर है, इनमें भेदभाव क्यों ? इन लड़ाइया की जड़ धम और ईश्वर हैं । इसलिये धर्मका छाड दो और ईश्वर का नाम लेना बन्द कर दी फिर लड़ाइयाँ हानी बन्द हो जायगी । इस आक्षेप पर विचार करना चाहिये । इसके दो अङ्ग है ।

१) क्या धर्म और ईश्वर को त्याग देने से लड़ाइयाँ बन्द हो जायेगी ?

२) क्या धर्म के कारण युद्ध होते हैं ?

आइये पहले अङ्ग पर विचार करें ।

प्रश्न-धर्म में ऐसी कौन सी वस्तु है जिसके कारण लड़ाइयाँ होती हैं ?

उत्तर-लोग ईश्वर को भिन्न-भिन्न प्रकार का मानते हैं और भिन्न २ प्रकार सेपूजा करते हैं । कोई कहता है कि ईश्वर साकार है कोई कहता है कि निराकार है । कोई ईश्वर की मूर्ति बना कर पूजता है कोई मूर्ति बनाना पाप समझता है । जब भेदभाव हुआ तो लड़ पड़ते हैं ।

प्रश्न-हम थोड़ी देर के लिये मान लेते है कि ईश्वर के कारण लड़ाइयां होती हैं । अच्छा आप इस रोग को कैसे मिटाना चाहते हैं ?

उत्तर-धर्म और ईश्वर को त्याग देने से ।

प्रश्न-धर्म और ईश्वर को मनुष्यों से छुड़वाने के लिये आप क्या-क्या साधन ङरहण करेंगे ?

उत्तर-हम इनके विरुद्ध आन्दोलन करेंगे । हम व्याख्यान देंगे, पुस्तकें लिखेंगे और जनता में प्रचार करेंगे कि ईश्वर और धर्म बनावटी ढोंग है और मनुष्यों को ठगने के लिये स्वार्थी लोगों ने गढ़ लिये हैं । हम अपने विचारों को फैलाने के लिये सभायें स्थापित करेंगे ।

प्रश्न-क्या आप समझते हैं कि सि प्रकार झगड़े कम हो जायेंगे ?

उत्तर-अवश्य कम हो जायेंगे । जब कोई ईश्वर को मानेगा नहीं तो लड़ेगा क्यों ?

प्रश्न-अच्छा आप,कहते हैं कि स्वार्थी लोगों ने धोखाघड़ी के लिये धर्म और ईश्वर का ढोंग रचा है । अगर यह बात ठीक है तो क्या यह भिन्न २ धर्मों के प्रचारक आप का विरोध नहीं करेंगे ।

उत्तर-करेंगे तो अवश्य ! आपही कर रहे हैं । देखते नहीं कि पहले जमाने में धर्मान्ध ईसाइयों ने कितने सायंसवालों को जीवित जलवा दिया । कितनों को अनेक दुख दिये । गैलेलियो को इसलिये कैद भोगनी पड़ा कि वह भूमि को सूर्य्य के चारों ओर घूमने के सिद्धान्त का प्रचार करता था । ब्रूनो को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा क्योंकि वह सायंस का प्रचार करता था ।

प्रश्न-आजकल तो ऐसा नहीं होता ।

उत्तर-आजकल भी कहीं-कहीं होता है । अमेरिका के ईसाइयों ने एक साइंटिस्ट को युनीवर्सिटी से निकाल दिया कि वह डार्विन के विकासर्ववाद का प्रचारक था । परन्तु आजकल हम लोगों के घोर प्रचार से धर्मान्ध लोगों को नीचा दिखाया गया है, नहीं तो यह कब मानते, हम लोगों को भी जीवित जला देते । देखो ब्रैडला (Breadlaugh) होलीओक (Holy-oake) आदि सज्जनों को इंगलैन्ड में ईसाइयों से घोर युद्ध करना पड़ा ।

प्रश्न-तब तो यों कहना चाहिये कि युद्ध बढ़ गया, घटा कहाँ ?

उत्तर-कैसे ?

प्रश्न-पहले तो हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी आपस में लड़ते थे । परन्तु अब इनमें एक आप औरआ मिले और चार से पाँच लड़ने वाले होगये । अर्थात् हिन्दू, मुसलमान, ईसाई यहूदी, और अनीश्वरवादी नास्तिक ।

उत्तर-हम लड़ाई कम करते हैं । बढ़ाते नहीं ।

प्रश्न-कैसे, जब कोई मुसलमान मस्जिद में नमाज पढ़ने जाय या अपने धर्म का प्रचार करे तो आप उसके विरुद्ध प्रचार करते हैं और वह भड़कता है । ऐसी दशा में लड़ाई बढ़ती है या घटती है । जिन ब्रैडला आदि का आपने वर्णन किया उन्होंने इंगलैंड में नियमानुसार समितियाँ स्थापित की थी जो ईसाइयों से विरोध करते थे । आजकल यूरोप में और विशेष कर रूप में तो ईश्वर का नाम लेने वालों को बुरी गति बनाई जाती है ।

उत्तर-जब ईश्वरवादी न रहेगा तो पूरी शान्ति हो जायेगी फिर लोग चैन की बशी बजायेंगे । सब प्रकार के भेदभाव मिट जायेंगे । इसी लिये रूस ने गिरजाघरों को तोड़ करि थियेटर बना दिये है और अब वहां आशान्ति का राज है ।

प्रश्न-यह तो आप अन्ध धर्ती के समान ही शेखी बधारने लगें । आप कहते हैं कि जब संसार में सब नास्तिक हो जायेंगे तो झगड़े बन्द हो जायेंगे । मुसलमान भी यही कहते हैं कि जब सव मुसलमान हो जायेंगे तब शान्ति हो जायेगी न हिन्दू रहेंगे न इनसे लड़ाई होगी । ईसाई भी यही कहते हैं कि लड़ाइयाँ उसी दम तक हैं जब तक सबके सब ईसाई नहीं हो जाते और यह आर्य समाजी लोग तो चिल्ला २ कर कहा करते है कि जब तक इनके वैदिक धर्म का पूरा प्रचार नहीं होता तव तक लड़ाई झगड़े नहीं मिटते । इस प्रकार जो बात यह लोग कहते हैं वही आप लोग कहते हैं । यह अपने मत का प्रचार करते हैं और आप अपने मत का । इस प्रकार आपने युद्ध करने वालों के दलों को कम नहीं किया किन्तु बढ़ा दिया । इससे तो शान्ति

के कोई चिन्ह दिखाई नहीं देते।

उत्तर- आप तो व्यर्थ का झगड़ा करते हैं। ईश्वर का नाम मिटते ही मतमतान्तर के झगड़े मिट जायेंगे।

प्रश्न-तो इसके लिये कोई प्रमाण भी है या हम आपके कथन को यों ही मान लें।

उत्तर-प्रमाण क्यों नहीं। जब झगड़े की जड़ काट दी गई तो झगड़े का वृक्ष अपने आप सूख जायेगा।

प्रश्न-झगड़े की जड़ क्या है ?

उत्तर-ईश्वर।

प्रश्न-जो ईश्वर को नहीं मानते या भिन्न २ धर्मों से सम्बन्ध नहीं रखते वहक्या नहीं लड़ते?

उत्तर-नहीं वे क्यों लड़ने लगे।

प्रश्न-क्या कोई इतिहास का ऐसा प्रमाण दे सकते हैं जब देश या जातियां सर्वथा नास्तिक हो गई हों और उनमें कोई लड़ाई झगड़े न हुए हों।

उत्तर-ऐसा तो अब तक नहीं हुआ। ऐतिहासिक काल में तो लोग किसी न किसी धर्म के अवश्य अनुयायी रहे और इस लिये युद्ध भी ही होते ही रहे। परंतु हम ऐसा समय अवश्य लाना चाहते हैं जब कोई ईश्वर का नाम न ले और सब भाई-भाई के समान प्रेम से रहें।

प्रश्न-अच्छा अगर आप मानते हैं कि ईश्वर के नाम के कारणही लड़ाइयां होती हैं तो कुत्ते क्या लड़ते हैं ? वे तो न ईसाई हैं, न हिन्दू न मुसलमान, न आर्यों।

उत्तर-वह तो ईश्वर के नाम पर नहीं लड़ते, परन्तु वह पशु हैं। इसलिए लड़ते हैं।

प्रश्न-तब तो यह सिद्ध हुआ कि लोग धर्म और ईश्वर के कारण नहीं लड़ते किन्तु कुत्तों की भाँति उनमें भी जब पाशविक वृत्तियाँ जाग पड़ती है तब वे लड़ पड़ते हैं तथा धर्म और ईश्वर का केवल बहाना हुआ करता है।

उत्तर-यह तो आपने भी माना कि बहाना होता है। हम उस बहाने के कारण को भी मिटाना चाहते हैं। जब धर्म और ईश्वर के नाम का बहाना न होगा कैसे लड़ेंगे ?

प्रश्न-आपने फिर वही बात कहीं। कुत्तों के पास इस प्रकार का कोई बहाना नहीं परन्तु वह लड़ते हैं। इसी प्रकार जब मनुष्य की पाशविक वृत्तियाँ जागेंगी तो धर्म और ईश्वर न सही। वह कोई और बहाना ढूंढ़ निकालेंगे। धन और जमीन के लिए लड़ेंगे। धर्म और ईश्वर के सच्चे भाव मनुष्य की पाशविक वृत्तियों को रोकते है, भड़काते नहीं। यदि लोग सच्चे धार्मिक और ईश्वर के श्रद्धालु बन जाय तो वे अपने पाशविक विचारों को वश में रक्खेंगे। परोपकार करेंगे और लड़ाइयाँ बन्द होगी। इसलिये आपको यदि संसार में शान्ति स्थापित करनी है तो सच्चे धर्म और ईश्वर परायणता का प्रचार कीजिये।

उत्तर-नहीं जी, तुम तो व्यर्थ ही झगड़ते हो। देखो जब तक लोग यह मानते रहेंगे कि इस सृष्टि का कर्त्ता ईश्वर है उस समय तक मनुष्यों में मतभेद रहेगा ही।

प्रश्न-तो क्या नास्तिकों में मतभेद नहीं है ? क्या सब नास्तिक सृष्टि-रचना के विषय में एक मत हैं ?

उत्तर-हाँ। बेशक मानते हैं कि सृष्टि का रचने वाला कोई ईश्वर नहीं।

प्रश्न-यों तो सब धर्म वाले मानते हैं कि ईश्वर सृष्टि का रचयिता है। फिर इस अंश में वे भी एक मत हुये।

उत्तर-अन्य बातों में तो भेदभाव है। जैसे ईश्वर के नाम स्वरूप, स्थान, आदि में। कोई कहता है कि ईश्वर का नाम अल्लाह है कोई कहता है ओ३म् है कोई और बताता है।

प्रश्न-तो क्या नास्तिक केवल ईश्वर का नाम छोड़ने मात्र से एक सत हो गये ? क्या उनमें सिद्धान्तों का भेदभाव नहीं। यदि तुमने ईश्वर को माना छोड़ दिया तो सृष्टि की उत्पत्ति का क्या कारण मानोगे। कोई कहता है कि सृष्टि की उत्पत्ति का क्या कारण मानोगे। कोई कहता है कि सृष्टि एक आकस्मिक घटना है जिसका कोई कारण नहीं कोई कहता है कि भिन्न २ चीजों में स्वभाव है उसी से प्रेरित होकर वे सृष्टि रूप हो जाती हैं। इस प्रकार नास्तिकों के भी तो बहुत से मत हैं। जब नास्तिक लोग आस्तिकों को संसार से निकाल देगे तो स्वयं आपस में लड़ेंगे।

उत्तर-न लड़ेंगे। क्योंकि पूजापाठ का तो प्रश्न न रहेगा, लड़ाई पूजापाठ के रूपों पर होती है।

प्रश्न-नहीं। तुम गलत कहते हो। तुमको अनुभव ही नहीं है कि ईश्वर को छोड़ देने और नास्तिक हो जाने का क्या अर्थ है। अभी ईश्वर विश्वास में किसी प्रकार को कमी आ जाने से लोगों की पाशविक वृत्तियाँ झट उठ खड़ी होती है। परन्तु जब ईश्वर का विश्वास सर्वथा हट जायगा तो लोग खुल्लम खुल्ला पशु बन कर बिचरेंगे।

उत्तर-क्या आजकल नास्तिक लोग पशुवद् विचरते हैं और क्या मतमतान्तरों के मानने वालों में दुष्ट पुरुष नहीं है।

प्रश्न-मैं यह नहीं कहता कि सब नास्तिक लोग दुष्ट हैं। नहीं नहीं। इनमें से बहुत से बड़े सज्जन हैं और धर्मधुरन्धरों में सैकड़ों का जीवन पसुओं से भी नीच है। परन्तु यहाँ प्रश्न ही और है।

उत्तर-क्या प्रश्न है ?

प्रश्न-प्रश्न दो हैं, पहला तो यह कि ईश्वर के नाम लेने वालों में धु,इट क्यों है ? दूसरे यह कि नास्तिक लोगों में सदाचार का भाव क्यों उपस्थित है।

उत्तर-हाँ, ठीक समझाइये-

प्रश्न-हम पहले कह चुके है कि ईश्वर विश्वासी और आस्तिक हनाा एक वात है और केवल मुख से ईश्वर-विश्वासी कहना दूसरी बात।

उत्तर-तो क्या जो अपने को ईश्वर-विश्वासी कहते हैं वे झूठ कहते हैं ?

प्रश्न- हाँ ! बहुत से झूठ कहते हैं। सच्चे आस्तिक कुकर्म नहीं करते और न दूसरों को सता सकते हैं। धर्मात्मा वह है जो मनुष्य जाति का उपकार करे। पाखण्डी को धर्मात्मा नहीं कह सकते। यह जो धर्म सम्बन्धी बलवे होते हैं, उन लोगों को ओर से हैं जिन्होंने धर्म का मर्भ तो समझा नहीं और अपने स्वार्थ को सिद्धिके लिये धर्म के नाम पर लड़ बैठे। क्या तुमने इतिहास में नहीं पढ़ा कि कई विजेताओं ने राज्य के लोभ में आकर युद्ध ठान दिया और आड़ धर्म की ले ली।

उत्तर-हाँ। कई ऐसे हुये हैं ?

प्रश्न-फिर आप उनके लिये धर्म को क्यों उत्तरदाता ठहराते हो ?

उत्तर-इसलिये कि धर्म ऐसी चीज है जिसका बहाना लोग जल्दी से ले बैटते हैं। यह भी तो कुछ कम दोष नहीं है।

प्रश्न-यहाँ भी आप गलती करते हैं।

उत्तर-क्या ?

प्रश्न-यद्यपि धर्म के नाम पर युद्ध और बलवे हुए परन्तु धर्म कारण न था और जहाँ धर्म की आड़ ली गई उनकी संख्या भी बहुत अधिक नहीं थी। इनसे कई गुने युद्ध ऐसे हुये जिनमें धर्म का कोई सम्बन्ध नहीं था औरकेवल इसलिये युद्ध किये गय कि एक राजा दूसरे राजा को परास्त करके उसके राज को छोनना चाहता था। सिकन्दर की बढ़ाइयाँ धर्म के लिये नहीं हुई ! कार्थेज-वीर हानिबल ने धर्म के लिये युद्ध नहीं किया राजपूताने में सैकड़ों राजपूत आपस में कट कर मर गये। वहाँ धर्म कारण न था। वे या तो लाग डांट और ऐठ के लिये लड़े या देश जीतने के लिये, या स्त्रियों के डोले के लिये। लोग धर्म को त्याग भी दें तो भी यह निबलतायें रहेंगी ही और यह मनुष्य को उमारतो रहेंगी। आज कचहरियों में जो अभियोग चलते हैं उनकी संख्या देखी। शायद सैकड़ों में एक दो धर्म सम्बन्धी होंगे शेष अन्य झगड़ों के कारण।

వేదార్థ విజ్ఞానం

-డా॥ కోడూరి సుబ్బారావు

'బ్రహ్మచర్యం' అవసరమా ?

ఈ ప్రశ్నకు జవాబు తెలుసుకునేముందు 'బ్రహ్మచర్యం' అనే పదమునకు అర్థమేమిటో తెలుసుకోవటం అవసరం. 'బ్రహ్మ' అంటే పెద్దది, గొప్పది అని అర్థం అట్టిదానిలో చరించటాని-ఆ స్మృతిలో జీవితం గడపటాన్ని బ్రహ్మచర్య మంటారు. 'బ్రహ్మ' అనే పదమునకు సంస్కృత నిఘంటువులో చాలా అర్థాలు కనబడతాయి. వాటిలో ముఖ్యమైనవి నాలుగు. అవి- 1) పరమేశ్వరుడు (సృష్టికర్త). (అతడే అన్నిటికన్న పెద్దవాడు, గొప్పవాడు కదా !) 2) ఆయనదే సృష్ట్యాదిలో ఉపదేశింపబడిన నాలుగు వేదాలు. (అవే మానవజాతికి జ్ఞాన స్రోతస్సులు), 3) జీవితంలోని మొదటి భాగమైన బ్రహ్మచర్యా శ్రమం (విద్యార్థిదశ) 5 నుండి 25 సంవత్సరాల వరకు, 4) మైథున త్యాగం (స్త్రీ సంపర్కం చేయ కుండా నిగ్రహంతో ఉండటం-ఆ ఆలోచనే రాకుండా ఉండటం). స్త్రీలు కూడా అట్లే ఉండాలి. బ్రహ్మచర్యమనే పదము స్త్రీ పురుషు లిరువురికి వర్తిస్తుంది.

పై నాల్గింటిలో 3, 4 అర్థాలను కొంత వివరంగా తెలుసుకుందాము. మన ప్రాచీన ఋషులు మానవజీవన కాలాన్ని నాలుగు భాగాలుగా చేసి, వాటికి బ్రహ్మచర్య గృహస్థ వానప్రస్థ సంన్యాసాశ్రమాలని పేర్లుపెట్టారు. ఇక్కడ ఆశ్రమం అంటే-(ఆ సమంతాత్ శ్రమయతి యస్మిన్) చక్కగా ఒక లక్ష్యం కొరకు శ్రమించటం-గట్టి ప్రయత్నం చెయ్యటం అని అర్థం. వీటిలో మొదటిదైన బ్రహ్మచర్యాశ్రమంలో (విద్యార్థిదశలో) పూర్తిగా మైథున త్యాగం చెయ్యాలి. అందుకు బలమైన రెండు కారణాలు చెబుతారు. ఆ వయస్సులో శరీరం ఎదిగి బలపడుతుంది. కనుక అప్పుడు వీర్యనష్టం చేసుకుంటే శారీరిక ఎదుగుదల, బలపడటం సరిగా జరుగదు. అందుచే జీవితాంతం తేలికగా వ్యాధులకు గురికావటం, బరువైన పనులు చేయలేక పోవటం జరుగుతుంది. తద్వారా మరెన్నో సమస్యలకు గురియౌతారు. ఆత్మన్యూ నతా భావాలి కలుగుతూ ఉంటాయి. విద్యార్థుల ఆత్మహత్యలకు ఇది కూడా ఒక కారణమంటు న్నారు మానసిక వైద్యులు, తత్త్వవేత్తలు, రెండవ కారణం-ఆ వయస్సులో శృంగార ఆలోచనలు చేస్తే చదువుపై శ్రద్ధ, ఏకాగ్రత తగ్గిపోతుంది. అందుచే అతడు బౌద్ధికంగా వెనుకబడిపోతాడు. జీవితంలో ఎదుగ గలిగినంత ఎదుగ లేకపో తాడు. ఈ విషయంపై మన ప్రాచీన ఋషులు చాలా పరిశోధనలు చేసి చెప్పిన మాట లేమంటే-

శ్లో॥ ఆహారస్య పరంధామ శుక్రం తద్రక్ష్య మాత్మనః । క్షయోహ్యస్య బహూన్ రోగాన్ మరణం వా నిచ్ఛతి ॥

తాత్పర్యం : శుక్రమంటే వీర్యం. అది ఆహారం యొక్క పరమధామం-సారభూతం. మనలను మనం రక్షించుకోవటానికి ఆరోగ్యంగా, బలంగా ఉండటానికి వీర్యాన్ని మన శరీరంలో భద్రపరచు కుంటూ ఉండాలి. వీర్య దుర్వినియోగం వల్ల అనేక రోగాలు కలుగుతాయి. దాని విపరీత నాశనం వల్ల మరణం కూడా సంభవిస్తుంది అంటాడు సుశ్రుతా చార్యుడు, తమ సుశ్రుత సంహితలో.

శ్లో॥ అగ్నిమూలం బలం పుంసాం, రేతోమూలం తు జీవితం । తస్మాత్ సర్వప్రయత్నేన, అగ్ని వీర్యం చ రక్షయేత్ ॥

తాత్పర్యం : జఠరాగ్ని (జీర్ణశక్తి) మానవుల బలానికి కారణమౌతుంది. రేతస్సు (అంటే- వీర్యం) ఆరోగ్యంగా ఇంఅరదియపటుత్వంతో, బ్రహ్మవర్చస్సుతో దీర్ఘకాలం జీవించటానికి మూలమౌతుంది. అందుచే అన్నవిధాలుగా ప్రయత్నించి శరీరంలో జఠరాగ్నిని, వీర్యాన్ని రక్షించుకుంటూ ఉండాలి అంటాడు అగ్నివేశ మహర్షి తమ చరకశాస్త్రంలో, ఈ విధంగానే అన్ని ఆయుర్వేద గ్రంథాలు బ్రహ్మచర్యాన్ని నొక్కి వక్కాణించాయి.

"త్రయ ఉపస్తంభన మహ ఇతి+ఆహారః స్వప్నో బ్రహ్మచర్యమితి" (చరకం)-ఆరోగ్య రక్షణకు మూల స్తంభాలు మూడు. శుద్ధమైన, సమతుల్య మైన, తన శరీర తత్త్వానికి అనుకూలమైన, సాత్వికాహారం మితంగా హితంగా న్యాయార్జిత మైనది సేవించటం మొదటి మూలస్తంబం. రెండవది స్వప్నః (నిద్ర)-సరిపడినంతగా కనీసం 6 గంటలు నిద్రించాలి. రాత్రి 9 గంటలకే నిద్రించి తెల్లవారు ఝామున 3-4 గంటల మధ్య నిద్రలేవటం ఉత్తమం. మూడవ స్తంభం బ్రహ్మచర్యం-వీలైనంత ఎక్కువగా వీర్యాన్ని రక్షించుకోవటం. కనీసం మూడు కాళ్ళైనా ఉంటే కాని ఆ పీటపై మనం క్షేమంగా కూర్చో లేముకదా ! అందుచే నిద్రాహారాలు ఎంత ముఖ్యమో బ్రహ్మచర్యం కూడా అంతే ముఖ్యం. ఇది విద్యార్థులకు చాలా చాలా అవసరం. ముఖ్యం.

కాని, నేటి యువతీ యువకులు ఫ్యాషన్ల మోజులో, ప్రకటనల మోజులో, సినిమాల మోజులో పడి కామాంధులై పోతున్నారు. దీనికి తోడు నేటి యువతీయువకుల కాలేజీలు ఒకటే కావటం (Co-Education) మరింత ప్రేరేపిస్తు న్నది. వస్త్రధారణలు మరొక కారణంగా ఉన్నాయి. ఇవన్నీ కలిసి నేడు బ్రహ్మచర్యం నవ్వుల పాలయ్యింది. నేటి అల్లోపతీ వైద్యులకు బ్రహ్మ చర్య విలువలు అసలు తెలియనే తెలియక పోవటం దురదృష్టకరం. కొందరైతే- "ఆకలి దాహాల వంటిదే కామంకూడా కనుక కామేచ్ఛ కలిగినపుడు దానిని తీర్చుకోవటమే మంచి" దంటున్నారు. అది కృత్రిమ పద్ధతిలోనైన (హస్తమైథునం Masterbation ద్వారానైనా) సరే తీర్చుకోవటం మంచిదనే మహాను భావులు కూడా కొందరున్నారు. దానితో కొందరు యువతీ యువకులు హస్తమైథు నానికి అలవాటుపడి పోతున్నారు. అది కొందరికి వ్యసనంగా మారి పోయి నిర్వీరు యలుగా, నిస్తేజులుగా, నిర్బలు లుగా మారి పోతున్నారు. కొందరు అక్రమ సంబంధాలు ఏర్పరచుకొని వ్యభిచారులై పోతు న్నారు. స్త్రీ హింస, మానభంగాలు, హత్యలు పెరిగి పోతున్నాయి. ఇప్పటికైనా మేధావివర్గం మేల్కొని ఈ దుస్థితి నుండి యువతను రక్షించ వలసిందిగా మేము ప్రార్థిస్తున్నాము.

భారతీయ వైద్య విధానాలేవీ వీర్యనష్టాన్ని సమర్థించవు. కాగా వీర్యధారణచేసి ఓజస్వం తులు కమ్మని ప్రోత్సహిస్తాయి. హోమియో వైద్యం జర్మనీ దేశంలో కనిపెట్టబడినా అది పూర్తిగా ఆయుర్వేద స్వస్థవృత్తాన్నే (దినచర్యనే) అనుసరి స్తుంది. రోగకారణాలను రికార్డు చేసుకునేటప్పుడు (Care Taking చేసేట ప్పుడు) వీర్యనష్టం చేసుకు న్నారా ? అని

అడుగుతారు. మనస్సులో సెక్సు భావనలు బలంగా ఉన్నాయా ? అని ప్రశ్నించి రికార్డు చేసుకుంటారు. అవే ఆ వ్యాధిలో మూలకారణ మైతే దానినిబట్టి మందు ఎన్నుకొని అద్భుతమైన ఫలితాలను సాధిస్తారు. హస్తమైథున దురభ్యాసం ఉంటే ఆ భావాలు మనసులో కలుగ కుండా కూడా హోమియో పతిలో మందులుం టాయి. మీ సమీపంలో ఉన్న వైద్యులను సంప్ర దించండి. ఇంతటి విశిష్టతలున్నాయి కనుకనే భారత ప్రభుత్వం హోమియోవైద్యాన్ని AYUSH (ఆయు ర్వేద, యోగ, యునాని, సిద్ధ, హోమియో పతి) లో కలిపి ఆదరిస్తున్నది, ప్రోత్సహిస్తున్నది.

అట్లే, భారతీయ మత సంప్రదాయేలేవీ వీర్యనష్టాన్ని సమర్థించవు. ఇంద్రియనిగ్రహాన్ని, బ్రహ్మచర్యాన్ని పాటించ సర్వదుఃఖ నివృత్తిరూప ముక్తిని సాధించమనే ప్రోత్సహిస్తాయి. విదేశీమతాలే వక్రమార్గాలను ప్రత్సోహిస్తున్నాయి. 'Eat, Drink and be Marry' అంటూ ప్రేరేపిస్తున్నాయి. ఆ మతాలు పూర్వజన్మలను, పునర్జన్మ లనుకూడా అంగీకరించవు. అయితే మానవులలో సుఖ దుఃఖాల వ్యత్యాస మెందుకు ? అట్లయితే, దేవుడు పక్షపాతి కాడా ? ఇక మనం వీర్యోత్పత్తిని గురించి, దాని విలువలను గురించి తెలుసు కుందాము.

వీర్యోత్పత్తి-దాని విలువ

ఋగ్వేదానికి ఉపవేదమైన ఆయుర్వేదం వీర్యోత్పత్తిని గురించి ఆ క్రింది విధంగా చెబు తుంది.

శ్లో॥ రసాద్రక్తం తతోమాంసం మాంసాన్ మేధః ప్రజాయతే । మేధస్యాస్థిః తతో మజ్జా, మజ్జాయాః శుక్ర సంభవః ॥ -సుశ్రుతం

తాత్పర్యం : జీర్ణమైన ఆహారం ముందుగా రసంగా (Lymph గా) మారి రక్తంలో కలుస్తుంది. ఆ రక్తంనుండి క్రమంగా మాంసము, మేధ (క్రొవ్వు), అస్థి (ఎముక-Bone tissue), మజ్జా (Bone Marrow) శుక్రకణములు (స్త్రీలలో రేతస్సు-అండకణములు) తయారౌతాయి. ఇవి ఉత్తరో త్తర శ్రేష్ఠమైనవి. సారభూతమైనవి. అంటే విలువైనవని గ్రహించాలి.

ఇట్టి విలువైన వీర్యన్ని ఎంత ఎక్కువగా రక్షించుకుంటే అంతగా శారీరికబలం, బౌద్ధిక బలం పెరుగుతాయి. యోగసాధన చేసి ఆ వీర్యాన్ని ఓజస్సుగా మార్చుకుంటే శరీరానికి బ్రహ్మవర్చస్సు కలుగుతుంది. బుద్ధివికసించి మేధస్సుగా, ప్రజ్ఞగా, ప్రతిభగా మారుతూ చివరకు ఋతంభరా ప్రజ్ఞగా స్థిరపడుతుంది. సృష్టిరహ స్యాలన్నీ కరతలామలకం అవుతాయి. ఏ పదా ర్థాన్ని గురించి తెలుసు కోవాలనుకుంటే ఆ పదా ర్థాన్ని గురించి సంపూర్ణ జ్ఞానం స్పష్టంగా అవగత మౌతుంది. ఆ ఋతంభరాప్రజ్ఞతోనే ఆత్మపరమా త్మల సాక్షాత్కారం అవుతుంది. జన్మ ధన్యమౌ తుంది.

అట్టి విలువైన వీర్యాన్ని వ్యర్థం చేసుకోవటం బుద్ధిమంతుల లక్షణంకాదు. మహర్షులు, మహాత్ములు ఏమన్నారంటే- "సంతానార్థం మాత్రమే వీర్యాన్ని ఖర్చుపెట్టడం ఉత్తమో త్తమం లేదా ఋతుగామియైతే మధ్యమం". (ఋతుగామి అంటే-స్త్రీలకు ఋతుస్రావా నంతరం 10, 15 రోజుల అండం విడుదలయ్యే సమయంలో తీవ్రకామేచ్ఛ కలుగుతుంది. ఆ సమయాన్ని ఋతుకాలం అంటారు. అప్పుడు), మిగిలిన సమయాలన్నీ నీచం. స్పర్శేంద్రియానికి దాసులం అయినట్లు అవుతుంది. విలువైన వీర్యాన్ని మురుగు కాల్వలో ప్రవహింప చేసుకోవటం" అన్నారు మహర్షులు. ఈ చివరిమాటలు మనకు కఠినంగా అనిపించినా ఇవి సత్యం.

గృహస్థ బ్రహ్మచర్యం గురించి తెలుసు కుందాము.

'గృహస్థ బ్రహ్మచర్యం' అంటే ఏమిటి ?

పూర్వం తెలిసి కొన్నట్లుగా బ్రహ్మ చర్యా శ్రమం తదుపరిది గృహస్థాశ్రమం. అంతవరకు యువతీ యువకులు వేరువేరు గురుకులాలలో కఠినమైన నియమాలు పాటిస్తూ వచ్చారు కనుక వారికి సమావర్తన (స్నాతక) సంస్కారం జరిపి గురువులు చాలా ఉపదేశాలు చేస్తారు. వాటిలో "ప్రజతంతుం మావ్యవచ్ఛేత్సీః -ప్రజాతంతువును విచ్ఛిన్నం చెయ్యవద్దు" అనేది ఒక ఉపదేశం. అంటే సంతానాన్ని కని, పెంచి పెద్దచేసి, విద్యా బుద్ధులు చెప్పించి వారి కాళ్ళపై వారు నిలబడేటట్లు చెయ్యటం. తమ తల్లిదండ్రులు తమను ఏ విధంగా తీర్చిదిద్దారో అట్లే వారి సంతానాన్ని వారు తీర్చిదిద్దాలి. అందుకు పురుషునికి స్త్రీ, స్త్రీకి పురుషుడు అవసరం-అనివార్యం. ఇంతేగాక, ఎంతకాలం తల్లిదండ్రు లువారికి తోడుగా ఉంటారు ? జీవితాంతం తోడుగా నిలబడే జీవనసఖులు అవసరమే కదా ! అందుకు పెద్దల, బంధుమిత్రుల సమంలో తమ గుణ కర్మస్వభా వాలకు తగిన యువతిని ఎంచు కొని వివాహం చేసుకోవటమే సరియైన పరిష్కా రం. వివాహ సంస్కారంలో గృహస్థాశ్రమ నియ మాలు చాలానే ఉపదేశింపబడ్డాయి. ఆ వివరాలు మహర్షి దయానందులవారి సంకలన రచన "సంస్కార విధి"లోని గృహస్థాశ్రమ ప్రకరణాన్ని చదివి తెలుసుకోండి. ఇక మనం గృహస్థ బ్రహ్మ చర్యాన్ని గురించి తెలుసుకుందాము-

"శ్లో॥ ఋతుకాలాభిగామీ, స్యాత్స్వదార నిరతః సదా । బ్రహ్మ చార్యేవ భవతి యత్ర తత్రాశ్రమే వసన్ ॥

-మనుస్మృతి (3-45, 50)

తా॥ నిషిద్ధ రాత్రులను వదిలి తన భార్యతోనే ఋతుకాలంలో మాత్రమే మైథునక్రియ జరుపు వాడు. గృహస్థాశ్రమంలో ఉన్నప్పటికీ బ్రహ్మ చారికి సమానుడు" అని మన ధర్మ శాస్త్రాలు చెబుతాయి.

ఋతుకాలమంటే-స్త్రీ బహిష్టు అయిన దినం నుండి 16 దినముల వరకు ఉన్న కాలాన్ని ఋతుకాలం అంటారు.

అయితే మొదటి 4 దినాలు స్త్రీలకు ఋతు స్రావం జరుగుతూ బలహీనంగా ఉంటారు కనుక అవి నిషిద్ధ దినాలు. అంటే-ఆ సమయంలో భార్యాభర్తలు కలియ కూడదు. మిగిలిన 12 దినాలలోనూ పౌర్ణమి, అమావాస్యా అష్టమి, చతుర్దశి పర్వదినాలు. కనుక ఆ దినములలో కలియ కూడదంటారు ఋషులు. ఆ రోజులలో విశేష హోమాలు చేసి, వేదస్వాధ్యాయంలో గడపాలంటారు. కనుక ఆ దినములు కూడా నిషిద్ధములే.

"శ్లో॥ అమావాస్యాష్టమీం చ పౌర్ణమాసీం చతుర్దశీమ్ । బ్రహ్మచారీ భవేన్నిత్య మప్యృతౌ స్నాతకో ద్విజః ॥ -మనుస్మృతి (4-128)

తా॥ ఋతుకాలమైనప్పటికీ గృహస్థుడు అమావాస్యా, అష్టమి, పౌర్ణమి, చతుర్దశి దినా లలో భార్యతో శారీరక సంబంధం పెట్టుకో కుండా బ్రహ్మచారిగా ఉండాలంటుంది మనుస్మృతి.

సంతానం కలగాలి అనుకునే దంపతులు స్త్రీ శరీరంలో అండం విడుదలయ్యే సమ యంలో కలవాలంటారు వైద్యులు. ఆ సమయం తెలుసు కోవటానికి కొన్ని సూత్రాలు చెబుతారు స్త్రీ వైద్యనిపుణులు (గైనకాలజి స్పెషలిస్టులు). వాటి వివరాలకు మా ప్రచురణ "గర్భాదాన విజ్ఞానము" చదువ గోరుచున్నాము.

ఆవులు అండం విడుదలయ్యే సమయంలో ఏదో చిన్నబాధ ఉన్నట్లు అరుస్తూ ఉంటాయి. అది గుర్తించి ఆవు ఎదకు వచ్చిందని గుర్తిస్తారు. వీలైనంత తొందరగా ఆంబోతు దగ్గరకు తీసుకు వెళ్ళటంకాని, కృత్రిమ పద్ధతితో ఆంబోతు వీర్యాన్ని యోనిద్వారా ఆవు గర్భాశయంలోనికి ఎక్కించటం కాని చేస్తారు. అట్లే, కుక్కలు మొదలైన పశువులు ఋతుకాలంలోనే మైథునం చెయ్యటానికి యిష్టపడతాయి. వేరే సమయాలలో ఆడమొగ కుక్కలు కలిసి తిరుగుతున్నా సమా గమం చెయ్యవు, చెయ్యనివ్వవు. కాని, నాగరి కతగల మానవులు ప్రకృతికి దూరమై అసమాజ జీవితం గడుపుతున్నారు. పెక్కురోగాలకు గురియౌతున్నారు. ఆయుర్వేద చరక శాస్త్రం ఏమంటుందంటే-

శ్లో॥ వ్యాయామ హాస్యభాషాధ్వ గ్రామ్య ధర్మ ప్రజాగరాన్ । న+ఉచితానపి సేవేత బుద్ధిమా నాదిమాత్రయా ॥

తా॥ అతిగా వ్యాయామం చేయటం లేదా ఎక్కువ అలసట కలిగే పనులు చెయ్యటం, ఎప్పుడూ హాస్య భాషణ చెయ్యటం, అతి సంభోగం, రాత్రులు మేల్కొని ఉండటం. ఈ నాలుగు అంత మంచివికావు. బుద్ధిమంతులు వీటిని మితంగా వాడుకోవాలి. లేకుంటే శరీరంలో ధాతుశక్తి తగ్గిపోయి తేలికగా వ్యాధులు సంక్రమిస్తాయి. ఆయువు క్షీణిస్తుంది" అంటుంది.

మనం అల్పాయువును జయించి దీర్ఘకాలం ఆరోగ్యంగా జీవించాలంటే బ్రహ్మచర్యం, తపస్సు ముఖ్యమంటుంది అథర్వవేదంలోని బ్రహ్మచర్య సూక్తం. అందులోని కొన్ని విషయాలను తెలుసుకుందాము.

ఓం బ్రహ్మచర్యేణ తపసా దేవా మృత్యుము పాఘ్నత । ఇంద్రోహ బ్రహ్మ చర్యేణ దేవేభ్యః స్వరాభరత్ ॥ (అథర్వ-11-5-19)

బ్రహ్మ చర్యము మరియు తపస్సులతో దేవతలు-బుద్ధిమంతులు, సదాచారపరులు మృత్యువును వెనుకకు నెట్టివేస్తూ దీర్ఘకాలం జీవిస్తారు. ఇంద్రుడు (జీవాత్మ) బ్రహ్మ చర్యంతో ఇంద్రియాలను నిగ్రహిస్తూ ఎన్నెన్నో సుఖాలను పొందుతాడు.

ఓం బ్రహ్మచర్యేణ తపసా రాజా రాష్ట్రం విరక్షతి । ఆచార్యో బ్రహ్మచర్యేణ బ్రహ్మచారిణ మిచ్ఛతే ॥ (అ. 11-5-17)

దేశాన్ని పాలించే రాజులు బ్రహ్మ చర్య తపస్సులతో ప్రజలను చక్కగా పాలించగలుగుతారు, పోషించగలుగుతారు. (నేడు రాజులు లేరు కనుక మంత్రులు, నాయకులు అని అన్వయించు కోవాలి).

ఆచార్యులు, ఉపాధ్యాయులు బ్రహ్మచర్యం తోనే శిష్యుల అభిమానాన్ని పొందగలుగుతారు.

ఓం బ్రహ్మచర్యేణ కన్యా యువానం విన్దతే పతిమె । అనడ్వాన్ బ్రహ్మ చర్యేణ+అశ్వో ఘాసం జిగీర్షతి ॥ (అ. 11-5-18)

కన్యలు కూడా కన్యాగురుకులాలో చేరి బ్రహ్మ చర్యవ్రతాన్ని పాటించి శరీరాన్ని, బుద్ధిని బలపరచుకోవాలి. అట్టివారే తమకు తగిన పతులను పొంది సుఖిస్తారు. ఎద్దులు, అశ్వములు కూడా బ్రహ్మ చర్యాన్ని పాటిస్తేనే గడ్డితినికూడా బలసామర్థ్యాలను పొందుతాయి.

ఓం బ్రహ్మచారీ బ్రహ్మ భ్రాజద్బిభర్తి తస్మిన్ దేవా అధి విశ్వే సమోతాః । ప్రాణాపాన్ జనయన్నాద్ వ్యానం వాచం మనో హృదయం బ్రహ్మమేధామ్ ॥ (అ. 11-5-24)

బ్రహ్మ చర్యాన్ని పాటించిన వారే వేదజ్ఞానాన్ని పరమాత్మను పొందగలుగుతారు. శరీరంలోని ప్రాణాపాన వ్యాన వాయువులను బలపరచు కొంటారు.

మంచి వాక్కును, మనస్సును, హృదయాన్ని పొందగలుగుతారు. వారి మేధస్సు వికసించి అనేక విద్యా విజ్ఞానాలలో పరిపూర్ణులౌతారు.

ఈ విధంగా అథర్వవేదంలోని 26 మంత్రా లుగల బ్రహ్మ చర్యసూక్తం బ్రహ్మ చర్యం వల్ల కలిగే లాభాలను వేనోళ్ళ కీర్తిస్తుంది. మన ప్రాచీన ఋషులు మునులు, విజ్ఞానవేత్తలు, రాజులు, వీరులు బ్రహ్మ చర్యాన్ని పాటించియే మహాత్మా ర్యాలు చేయగలిగారు. ప్రపంచ గురువులై విలసిల్లారు. మనమంతా వారి వారసులమే. మనం కూడా నవనాగరికత మోజులోపడి కొట్టుకుపోకుండా పూర్వుల మార్గాన్ని అనుసరించటయే ఉత్తమం. సృష్టికర్త మనకు ఉత్తమోత్తమ మానవశరీరాన్ని నిర్మించి యిచ్చాడు. కేవలం విషయభోగాలను అనుభవించటానికి కాదు, ధర్మాత్ములమై పరోపకారంచేస్తూ పుణ్యం మూట గట్టుకోవడానకి. ధర్మమార్గంలోనే అర్థ కామాలను పొంద యత్నించాలి. సర్వదుఃఖ నివృత్తిరూప మోక్షాన్నిపొంద సాధన చెయ్యాలి. మన నీతి శాస్త్రాలు ఏమంటాయంటే-

ఓం ఆహార నిద్రా భయమైథునాని సమాని చైతాని నృణాం పశూనామ్ । ధర్మం నరాణా మధికో విశేషో ధర్మేన హీనాః పశుభిః సమానాః ॥

తా॥ 'ఆహారము తీసికొనుట, నిద్రపోవుట, భయపడుట, మైథునంతో సంతానంకనుట' అనే నాలుగు క్రియలు మానవులకు పశువులకు సమానమే, కాని, మానవులు తమ జ్ఞానంతో ధర్మాత్ములై ఉన్నతోన్నత శిఖరాలకు చేరుకో గలరు. ధర్మంలేని మానవులు పశువులతో సమా నులు'' అంటాయి నీతి శాస్త్రాలు. కనుక మానవ జీవిత లక్ష్యం ధర్మార్థకామమోక్ష సాధన కావాలి. అందుకొరకే గృహస్థులు కావాలంటారు ఋషులు.

గృహస్థులు తమ బాధ్యతలను పూర్తి చేస్తూ పంచ మహా యజ్ఞాలను చెయ్యాలి. పతంజలి మహర్షి ఉపదేశించిన యమనియమ ఆసన ప్రాణాయామాలను అభ్యసిస్తు మంచి ఆరోగ్యాన్ని, దీర్ఘాయువును పొంద యత్నించాలి. మైథునాన్ని మితంగా వాడుకుంటూ ఓజస్సును పెంచు కోవాలి. ప్రత్యాహార ధారణా ధ్యాన సమాధు లభ్యసిస్తూ ఆత్మ పరమాత్మల సాక్షాత్కారాన్ని పొంద సాధన చెయ్యాలి.

గృహస్థ బ్రహ్మ చర్యాన్ని గురించి గాంధీ మహాత్ముడు ఏమన్నారంటే-

"Sex urge is a fine and noble thing. There is nothing to be ashamed of it. But it is meant only for the act of creation. Any other use of it is a sing against God and humanity" - -M.K. Gandhi.

"కామావాంఛ మంచిది, గొప్పది. దానికి సిగ్గుపడ నవసరంలేదు. కాని, అది సంతానార్థమేకావాలి. లేకుంటే-అది దేవునికి, మానవత్వానికి వ్యతిరేక మౌతుంది" అన్నారు.

ఇట్టి మహాత్ముల, మహర్షుల, మేధావుల మాటలు కోకొల్లలుగా ఉన్నాయి. కనుక, మనమంతా వారి మార్గాన్నే పయనిద్దాము.

"ధియో యో నః ప్రచోదయాత్ ॥"

ఓ అంతర్యామీ ! మమ్ము బ్రహ్మ చర్యాది సద్వ్రతముల నాచరించ ప్రేరేపింపుము. నీ తృతీయ ధామమువైపు-ముక్తి ధామమువైపు-ఆనంద ధామమువైపు నడిపింపుము.

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र. - तेलंगाना के नव निर्वाचित अधिकारीगण

कोषाध्यक्ष श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी का सम्मान करते हुए

पुस्तकाध्यक्ष श्री जे. बसी रेड्डी जी का सम्मान करते हुए

श्री सदाविजय जी आर्य बोलते हुए

स्वामी जी का सम्मान करते हुए ठा. लक्ष्मण सिंह जा

पं. धर्मपाल शास्त्री जी का सम्मान करते हुए प्रधान विट्ठल राव आर्य

ब्रह्मचारी दीक्षेन्द्र जी तथा विवेकानन्द शास्त्री जी का सम्मान करते हुए प्रधान जी

श्रावणी पर्व पर आशिर्वाद देते हुए स्वामीजी, धर्मपाल शास्त्री जी, विवेकानन्द शास्त्री जी व ब्रह्मा डॉ. वसुधा-अरविन्द शास्त्री जी

श्री रामसिंह जी का सम्मान करते हुए रामचन्द्र कुमार जी

श्री विरजानन्द जी का सम्मान करते हुए वेंकटरघुरामुलु जी

श्री दीपक कुमार जी का सम्मान करते हुए वेंकटरघुरामुलु जी

Date of Publication 2nd and 17th of every Month, Date of Posting 3rd and 18th of every Month
आर्य जीवन 3-08-2020 Registered-Reg. No. HD/783/2018-20 RNI No. 52990/93

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor : Sri Vithal Rao Arya, M.Sc., LL.B., Sahityaratna.
Arya Pratinidhi Sabha A.P.-Telangana, Sultan Bazar, Hyderabad-500095.
Phone No. : 040-66758707, 24753827, Fax : 040-24557946.
Annual Subscription Rs. 250/- **సంపాదకులు :** విఠల్ రావు ఆర్య, **మంత్రి సభ**

To,

Swami Swarupanand ji Saraswath
Arya Samaj Mandir,
Hanuman Road,
New Delhi-1100

आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना के प्रधान चयनित किये गये प्रो. विट्ठल राव आर्य

हैदराबाद, 5 अगस्त-(मिलाप ब्यूरो) आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्र प्रदेश-तेलंगाना के चुनाव सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान स्वामी आर्यवेश की अध्यक्षता तथा चुनाव अधिकारियों के देख-रेख में पं. नरेंद्र भवन में संपन्न हुए। अवसर पर उत्तर-प्रदेश से पं. धर्मपाल शास्त्री, राम सिंह (उप-मंत्री सार्वदेशिक सभा), सदाविजय आर्य (उप-मंत्री, सार्वदेशिक सभा), विरजानंद (उप-मंत्री सार्वदेशिक सभा) एवं ब्रह्मचारी दीक्षेंद्र उपस्थित थे। इस दौरान सर्वसम्मति से प्रधान पद पर प्रो. विठ्ठल राव आर्य एवं मंत्री पद पर वेंकटरघुरामलु, एड्वोकेट निर्वाचित हुए।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, उप-प्रधान पद पर ठा. लक्ष्मण सिंह, हरिकिशन वेदालंकार, बी. शिवकुमार, डॉ. चंद्रय्या, डॉ. वसुधा शास्त्री का चयन किया गया। उप-मंत्री पद पर आर. रामचंद्र कुमार, कृष्णभगवान एवं गोस्वामी गणेशपुरी, कोषाध्यक्ष पद पर अशोक कुमार श्रीवास्तव, पुस्ताध्यक्ष पद पर जे. बसि रेड्डी, अंतरंग सदस्य के रूप में किशन गोपाल गिल्डा, सी.एच. रविकिशन, वेंकट रामि रेड्डी, श्रद्धानंद, सार्वदेशि आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए प्रतिनिधि के रूप में विठ्ठल राव आर्य, हरिकिशन वेदालंकार, अशोक कुमार श्रीवास्तव, वेंकट रघुरामुलू, डॉ. सी.एम. चंद्रय्या, ए. रामचंदर, एम. जयव्रत, एम. कृष्ण भगवान सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए। आधिकारिक तौर पर मुख्य चुनाव अधिकारी स्वामी अर्यवेश ने निर्वाचित अधिकारियों के नामों की घोषणा की।

विज्ञप्ति में बताया गया कि गत सोमवार को हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस एवं श्रावणी उपाकर्म पर्व धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम आर्य प्रतिनिधि सभा, आ.प्र. तेलंगाना के तत्वावधान में राजमोहल्ला स्थित पं. नरेंद्र भवन में डॉ. वसुधा अरविंद शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ संपन्न हुआ। तत्पश्चात भवन के सभागार में हैदराबाद आर्य सत्याग्रह बलिदान दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। सभा की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश ने की। मुख्य अतिथि के रूप में पं. धर्मपाल शास्त्री, रामसिंह, भाई बंसीलाल के पुत्र सदाविजय आर्य, विरजानंद, दीपक कुमार, विवेकानंद शास्त्री तथा मधुश्री उपस्थित थे। स्वामी आर्यवेश ने अपने संबोधन में वर्ष 1857 से अब तक आर्य समाज द्वारा चलाए गए आंदोलनों एवं स्वतंत्रता आंदोलनों में किए गए कार्यों का वर्णन किया। इस दौरान सत्याग्रह में शहीद वीरों को सामूहिक रूप से श्रद्धांजलि दी गई। अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान विठ्ठल राव आर्य, मंत्री वेंकट रघुरामुलू व अन्य उपस्थित थे।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR.

Editor : Sri Vithal Rao Arya • E-mail : acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691.

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్ రావు ఆర్య, ప్రధాన్ సభ, ఆర్య ప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్ బజార్, హైదరాబాద్-95. Ph : 040-24753827, E-mail : acharyavithal@gmail.com

संपादक : श्री विट्ठल राव आर्य, प्रधान सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रिन्टर्स, चिक्कड़पल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया ।

प्रकाशक : आर्य प्रतिनिधि सभा, आं.प्र. -तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद-500 095.